||धर्मश्री||

परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

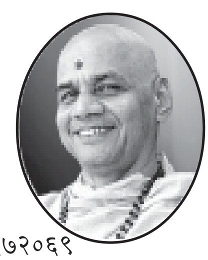

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाष: (०२०) २५६५२५८९, दूरमुद्रण: (०२०) २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट : www.dharmashree.org

वर्ष १५ अंक २ फाल्गुन, युगाब्द ५११८ त्रैमास जून २०१६

संपादक मंडल :
संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
पं. अशोक पारीक,
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
श्री. राहुल मारुलकर, पुणे
मुद्रक :
मंदार प्रिंटर्स,
७५६, कसबा पेठ, पुणे ११.
दूरभाष :(०२०) २४४५६१४२,
२४५७८९४२
mandarprinters@gmail.com

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. मन की निर्लिप्तता और दीर्घ आयुष्य!
११. जीवन एक चुनौती है इसे स्वीकार कीजिये: लेकिन कैसे?
१३. ''पूर्णयोग बोधिनी गीता''
१८. हम प्रपंच में प्रयत्नवादी हैं तो परमार्थ में प्रारब्धवादी क्यों हो जाते हैं?
२२. पूज्य गुरुदेव ने किया महाराष्ट्र के दो सम्प्रदायों के बीच सेतु का निर्माण!
२५. गुरु महिमा
२९. त्राहि माम् शरणागतम्
३७. चन्द्रपुर की वह राम कथा
३९. तीव्र वैराग्य और मुक्ति
४०. संपर्क योजना
४१. कविता – मैं शब्द हूँ।

गीता परिवार वार्ता :- ३० से ३६ देश के कोने कोने में छाया गीता परिवार
वेद विद्यालय वार्ता :- १०. मणिपुर वेदविद्यापीठ, २६. पुष्कर वेदविद्यालय, २७. आलंदी वेदविद्यालय

आवश्यक सूचना

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेद विद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''**धर्मश्री**'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें –

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन : 0145-2660498, मो. 09414003498, फैक्स : 0145-2662811
ई-मेल : bhalchandravyas43@gmail.com

सूचना

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

– संपादक

धर्मश्री के इस अंक के यजमान
श्रीमती रत्नीदेवी काबरा चॅरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई हैं।

साभिनंदन धन्यवाद !

संपादकीय

हमारे समाजमें, विशेषत: उच्च शिक्षित समाजमें, धर्म के विषयमें कईं भ्रान्त धारणाएं दृढमूल हो गई हैं। और ये धारणाएं उनमें प्रतिष्ठाप्राप्त होने के कारण वे क्रमश: समाज के अन्य स्तरोंपर भी फैलती दिखाई देती है। खेद की बात यह है कि न केवल निधर्मी अथवा धर्मविरोधी अपितु धर्म माननेवालों के मनमें भी ये धारणाएं दृढ हो रही हैं। अत: हर सच्चे धर्मप्रेमी का यह कर्तव्य बनता है कि स्वयं धर्म के यथार्थ रूप को जानकर औरों को भी सचेत करता रहे।

इन सभी भ्रान्त धारणाओंका प्रमुख कारण है 'धर्म' का अर्थ अंग्रेजी 'religion' शब्द के समान करना। इससे यह हुआ कि धर्म का अर्थ पूजा–पाठ, व्रत, प्रार्थना आदि कर्मकांड की परिभाषा में किया गया। फिर ये लोग मानने लगे कि धार्मिक व्यक्ति ईश्वर, परलोक, आत्मा, पाप–पुण्यादि अमूर्त बातों में विश्वास करता है। वह परलोकवादी होता है, उसे इस दृश्य विश्वसे कुछ लेना–देना नहीं होता है।

वास्तव में सभी सुशिक्षित, वैज्ञानिक दृष्टि से युक्त लोग मानते हैं कि किसी भी संकल्पना को उसके मूल प्रयोगकर्ताओं की दृष्टि से समझ लेना चाहिए। इस प्रकार हम यदि 'धर्म' की ओर देखेंगे तो पता चलेगा कि उसका स्वरूप कुछ भिन्न ही है।

हम यहाँ 'धर्म' की केवल दो परिभाषाएं देखेंगे। **'धारणात् धर्म:।'** और **'यतो अभ्युदय–नि:श्रेयस सिद्धि: स धर्म:।'**

'धारणात् धर्म:।' यह धर्म का कार्य बताती है। जिससे सुव्यवस्था निर्माण होती है और टिकती है वह धर्म है किससे? कर्तव्य से। जब समाजका हर घटक नित्यरूपसे स्वयं के और समाजके तथा संपूर्ण विश्व के हित हेतु कर्म ही स्वयं प्रेरणासे करेगा तब इस विश्वमें सदा एक व्यवस्था रहेगी। अब ऐसे कर्मों में अपने स्वास्थ्य हेतु नियमपालन, सार्वजनिक स्थलोंपर नियमोंका पालन, देश के कानूनों का पालन यह भी आता है और व्यक्तिगत मानसिक एवं आत्मिक विकास तथा स्वास्थ्य हेतु जप, ध्यान, व्रतपालन आदि कर्मकांड भी आता है। यथार्थ धर्माचरण इन दोनों को मिलाके बनता है।

'यत: अभ्युदय–नि:श्रेयस सिद्धि: स धर्म:। यह धर्म की दूसरी परिभाषा धर्म की व्याप्ति दिखाती है। एक है अभ्युदय अर्थात् इहलोक में, इस जगत में भौतिक समृद्धि। व्यक्ति एवं समाज तभी सभी सुखसाधनों से युक्त होंगे जब हर एक व्यक्ति अपना स्थान, अपनी क्षमताएँ (ज्ञान–कौशल्य) इनका अधिकतम उपयोग कर उन सुखसाधनों की निर्मिती करेगा। परंतु मानव के स्वरूप को देखते हुए केवल इतनाही पर्याप्त नहीं है। इसीलिए दूसरे क्षेत्र को, नि:श्रेयस को जोडा गया। मनुष्यमें जो आत्मविकासकी, आत्मकल्याणकी क्षमता है उसे प्रत्यक्ष में लाने हेतु भी पूजा–व्रत, यज्ञ, जप, ध्यान आदि कर्म आवश्यक है। अत: उनका भी समावेश भी धर्माचरण में है।

जो लोग ऐसा मानते हैं कि धर्म इस विश्वसे कुछ संबंध नहीं रखता है, उन्हें यह बताना आवश्यक है कि भारतीय धर्मशास्त्र के अनुसार 'धार्मिक' कर्म दो प्रकार के होते हैं। एक है 'इष्ट' अर्थात् पूजा–पाठ, तीर्थयात्रा, जप, यज्ञ आदि जिन्हें सभी लोग 'धार्मिक' कर्म मानते हैं। परंतु बहुत कम लोग जानते हैं कि धर्मशास्त्रकारोंने धार्मिक कर्मोंका एक और भी प्रकार बताया है जिसे 'पूर्त' कहते हैं। पूर्त कर्मों में इस जगत् के, सभी मनुष्यों के इतनाही नहीं सभी प्राणियों के हितार्थ कर्म आते हैं – जैसे सडकों के किनारे छांव हेतु वृक्ष लगाना, मनुष्यों एवं प्रणियों हेतु प्याऊ चलाना, पाठशालाएं, अस्पताल, धर्मशालाएं आदिका निर्माण एवं संचालन, तालाब खोदना। संक्षेप में कहें तो जिस–जिस के पास जो कुछ भी है उसके कुछ तो अंश का प्रयोग दूसरों के लिए करना।

यदि 'धर्म' का यह सम्यक् स्वरूप समझा जाय तथा उसे आचरण में लाया जाय तो यह निश्चित है कि नास्तिकों द्वारा भी 'धर्म' का स्वीकार होगा।

महत्त्वपूर्ण सूचना

पू. आचार्य स्वामी गोविंददेवगिरिजी महाराज की भागवत कथा दिशा टी.वी. चैनल पर जून १७ से ४० दिनोंतक प्रतिदिन प्रात: १०.३० से ११.३० तक प्रसारित होगी।

योगवासिष्ठ (१३)

मन की निर्लिप्तता और दीर्घ आयुष्य!

विगत अंक में पाठकों ने मन और जगत के संबंध की विवेचना में देखा कि - जगत की उत्पत्ति मन की वासनाओं के कारण होती हैं और वासनाएँ कर्मों के कारण वृद्धिगत होती हैं।

प्रलय काल में सब-कुछ समाप्त हो जाने के बाद, सारी योनियों के शरीर समाप्त हो जाने के बाद भी, ये वासनाएँ आकाश तल में ज्यों की त्यों रह जाती हैं और फिर, आकाश से वायु, वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से अन्न और अन्न से जीव सृष्टि पुनः साकार हो जाती है।

इसी प्रकार वासना से कर्म, कर्म से वासना, फिर वासना से कर्म -यह श्रृंखला चलती रहती है। अब आगे की प्रक्रिया के बारे में गुरुदेव ने जो समझाया; उसे समझें। - **संपादक**

योगवासिष्ठ में महर्षि वसिष्ठ जी ने श्रीराम को उनकी विभिन्न शंकाओ के समाधान हेतु कथाओं का भी सहारा लिया; जो अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ। प.पू. गुरुदेव ने अपनी इस प्रवचन माला में भी इसके अन्तर्गत कुछ कथाएं संक्षेप में बताईं। प्रस्तुत अंक में ''**आकाशज ब्राह्मण**'' और ''**राजा पद्म और रानी लीला**'' की संक्षिप्त कथाएं प्रस्तुत की जा रही हैं; किन्तु उसके पूर्व मन, कर्म और वासना का संबंध जान लेना आवश्यक है।

मन की श्रृंखलाएँ

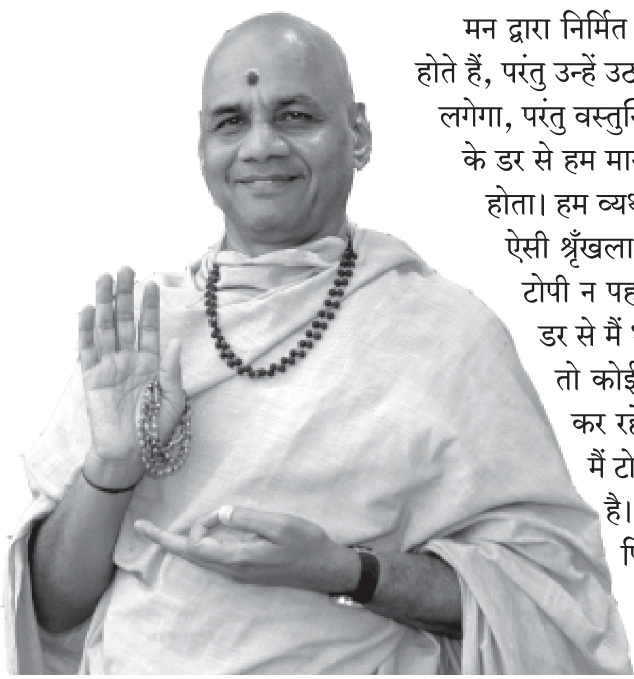

मन द्वारा निर्मित बंधन बड़े विचित्र होते हैं। ये बंधन बड़े कष्टदायी होते हैं, परंतु उन्हें उठाकर फेंकने की सामर्थ्य मन में नहीं होती। आश्चर्य लगेगा, परंतु वस्तुस्थिति यही है कि अनेक बंधन ऐसे होते हैं जो दूसरों के डर से हम मानते हैं; जबकि दूसरों का उससे जरा भी संबंध नहीं होता। हम व्यर्थ ही अपने आपको कष्ट देते रहते हैं। अब मन की ऐसी श्रृँखलाओं को क्या कहें? उदाहरण के तौर पर आजकल टोपी न पहनने की पद्धति चल रही है। लोग क्या कहेंगे, इस डर से मैं भी टोपी नहीं पहनता। मान लें कि मैंने टोपी पहनी; तो कोई आकर मुझसे थोड़े ही पूछेगा कि ''अरे यह क्या कर रहे हो, टोपी क्यों पहनी है?'' परंतु लोगों के डर से मैं टोपी नहीं पहनता। वास्तव में यहाँ धूप बड़ी कड़ी होती है। अनेकों के सिर पर बालों की छप्पर भी नहीं होती। फिर भी वे धूप में तकलीफ उठाते हैं; परंतु टोपी नहीं पहनते। अब मन के इस बंधन को क्या कहा जाए? टोपी का तो उदाहरण दिया। ऐसी अनेक बातें होती

मनुष्य काम करने से नहीं अपितु निठल्ला रहने से जल्दी मरता है। - पूज्यपाद

हैं। यहाँ गरमी इतनी होती है, फिर भी हमारे देशी साहब 'टाई' जरूर पहनते हैं। सुबह चाय पीते समय हाथ में समाचार-पत्र न हो; तो बेचैन हो जाते हैं। दोपहर की चाय के लिए आधा पौना घण्टा देर हो गई तो दुनिया सिर पर उठा लेंगे! यात्रा करते समय खिड़की के पास की सीट न मिले तो पूरी यात्रा में कोसते रहेंगे। क्या ये सारे बंधन, ये श्रृंखलाएँ आवश्यक होती हैं? हम भी मन ही मन जानते हैं। फिर हम अपने को उनमें जकड़ लेते हैं। परंतु ये श्रृँखलाएँ निर्माण किसने कीं?

ऊपर दिए उदाहरण व्यावहारिक जगत् के हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से सारी वासनाएँ श्रृंखलाएँ ही होती हैं। श्रृंखला की कड़ियाँ एक दूसरे से जुड़ी रहती हैं। प्रत्येक कड़ी वैसे तो स्वतन्त्र होती है और परस्पर गुँथी हुई भी होती हैं। इससे एक कड़ी खींचें तो दूसरी खिंच जाती है। दूसरी से तीसरी, यों सिलसिला बना रहता है। ऐसी होती है श्रृंखला। बीज की भी ऐसी ही श्रृंखला होती है। बीज से पेड़, पेड़ पर बीज, फिर बीज से पेड़ – चलती रहती है यह श्रृंखला! वैसे ही यह भी श्रृंखला होती है – वासना से कर्म, कर्म से वासना, फिर वासना से कर्म। यह श्रृंखला कब समाप्त होगी? इसे एक कथा के माध्यम से समझें।

आकाशज ब्राह्मण की कथा

मैं तो पृथ्वी और आकाश का पुत्र हूँ। दोनों के गुण लूँगा। पृथ्वी की वत्सलता लूँगा। लोक कल्याण के लिए ही कार्य करूँगा और ये कर्म आकाश की अलिप्तता से करूँगा। वृक्ष या लताएँ जैसे दे देते हैं फल अपने, वैसा आचरण रखूँगा।

महर्षि वसिष्ठ जी ने एक कथा सुनाई है। एक ब्राह्मण था; उसका नाम था 'आकाशज'! 'आकाशज' याने आकाश में जन्मा हुआ। मानो आकाश ही उसका पिता है और पृथ्वी माता। उसमें आकाश की विशालता एवं अलिप्तता थी और पृथ्वी की वत्सलता भी। उसने सोचा, 'मृत्यु' क्यों आती है? कर्म से ! परंतु हम तो कर्म को रोक नहीं सकते। जिस किसी को देह मिल गई है; उसे कर्म से छुटकारा तो नहीं मिल सकता। परंतु कर्मों से वासनाएँ निर्माण होती हैं। वासनाओं के कारण सारा जीवन ही दूषित हो जाता है। अब क्या उपाय हो सकता है? कर्म तो नहीं छूटते। ठीक है, शरीर से कर्म करते जाएँगे; उनका लेप मन को नहीं लगने देंगे।

आकाशज ने सोचा कि मैं तो पृथ्वी और आकाश का पुत्र हूँ। दोनों के गुण लूँगा। पृथ्वी की वत्सलता लूँगा। लोक कल्याण के लिए ही कार्य करूँगा और ये कर्म अलिप्तता से करूँगा। वृक्ष या लताएँ जैसे अपने फल दे देते हैं, वैसा आचरण रखूँगा। और फिर, 'यह मैंने किया' इस प्रकार का विचार कभी मन में नहीं आने दूंगा।

आकाशज रात-दिन लोककल्याण के कार्य करने लगा। शरीर से तो काम करता था; परंतु 'मैंने किया', यह भाव मन में नहीं रखता था। इस कारण उसे कभी फल की अपेक्षा रहती ही नहीं थी। अर्थात् वह वासनाशून्य कर्मशीलता का आचरण करता था।

फलस्वरूप दीर्घ समय तक जीवित रहा। मृत्यु उसका कुछ भी न बिगाड़ सकी। यमराज से शिकायत करने पर उन्होंने मृत्यु दूत को समझाया; हे मृत्यु, तूँ केवल निमित्त मात्र है, तू किसी को मार नहीं सकती। प्राणियों के आसक्ति पूर्ण कर्म ही उसे मारते हैं।

स्वास्थ्य के भी कुछ विशेष नियम होते हैं। वैद्यकशास्त्र का भी यह कहना है कि तथाकथित अनेक शारीरिक व्याधियों का जन्म

मनोविकारों से और मानसिक तनाव से होता है। रोगों के जीवाणु तो बाहर हमेशा ही होते हैं। अनुकूल भूमि पाने पर ही वे शरीर में प्रवेश कर पाते हैं। हमारे यहाँ शब्द हैं 'आधि' और 'व्याधि' । आधि याने मानसिक रोग! तनावयुक्त जीवन! 'व्याधि' माने शारीरिक रोग! व्याधि की जड़ें आधि में होती हैं। जिसका मन सुन्दर, निरामय तथा प्रसन्न रहता है, उसका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। मन का संतुलन बिगड़ता है वासनाओं के कारण। अपेक्षाओं के कारण हम तनावग्रस्त होते हैं। कर्मफल की अपेक्षाओं के कारण हमें बेचैनी होती है। आकाशज शरीर से लोकोपकार के कार्य पूरी तरह से निरपेक्ष रहकर करता था; परिणामतः उसके पास कोई रोग नहीं आ सका। वह मर ही नहीं रहा था। वह दीर्घायुषी हो गया! 'आधि' नहीं; इसलिए 'व्याधि' भी नहीं।

यमराज ने मृत्युदूत से कहा, ''तुम उसके पास जा सकते हो जो 'कर्म' करता है। वासनाओं के कारण कर्म होते हैं। वासना मन की शांति नष्ट करती है। मन की शांति नष्ट होते ही 'आधि' याने मनोविकृति का निर्माण हो जाता है। मन की विकृति पूरा स्वास्थ्य ही चौपट कर देती है। आंतरिक ज्ञानतंतुओं की स्थिति उलझनों से भर जाती है। उन पर विपरीत तनाव निर्माण होते हैं और स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। व्याधि निर्माण होती है। व्याधियों का प्रवेश हो गया तो समझ लो, तुम्हें मृत्यु का निमंत्रण दिया जा रहा है; परंतु ऐसी स्थिति न बने; तब तक तुम वहाँ नहीं जा सकते।

आकाशज कार्यरत है; इससे वह उत्साह से भरपूर है परंतु उसे कार्य का अहंकार नहीं है। 'मैं करता हूँ' इस प्रकार का भाव भी नहीं है; क्योंकि वासना नहीं है। इस कारण उसका मन निर्लेप है। अतः प्रसन्न है। यही उसके दीर्घायुष्य का रहस्य है।

आधुनिक काल के आकाशज

यह कथा काल्पनिक है; परंतु अवास्तविक नहीं है। महर्षि कर्वे दीर्घायुषी थे। वे एक सौ पाँच वर्ष जिये। एक बार किसीने उनसे उनके दीर्घायुष्य का रहस्य पूछा तो उन्होंने कहा, ''उम्र बढ़ रही है, इस बात की ओर मेरा कभी ध्यान ही नहीं गया, मैं तो निरंतर कार्यरत ही था।''

महर्षि कर्वे स्त्री-शिक्षा के ध्येय के पीछे जुटे हुए थे। वे लोक कार्य में निरंतर निमग्न रहे। निरपेक्ष, निरहंकार, निरालस सेवा करते रहे। उन्हें कोई रोग नहीं था। हो सकता है, मृत्यु आकर उनकी परिक्रमा कर लौट जाती होगी।

महर्षि कर्वे, पं. सातवलेकर आदि इस काल के 'आकाश-ज' ! योगवासिष्ठकार ने जान बूझकर ही उसे कोई नाम नहीं दिया। उसे कहा, 'आकाशज'; क्योंकि ऐसे आकाशज कहीं भी मिल जाते हैं। बहुत थोड़े होते हैं ऐसे लोग, यह बात भी उतनी ही सच है। यदि हम अपने को 'आकाशज' बनाना चाहते हैं; तो हमें योगाभ्यास करने की नितांत आवश्यकता है।

विपरीत दिशा के कारण योग पूर्णतः सफल नहीं हो सका :–

आजकल योग की ओर लोगों का ध्यान तो आकर्षित हुआ है; परंतु उसे 'योग' नहीं, 'योगा' कहते हैं। (अशोक नहीं; अशोका, कुबेर नहीं; कुबेरा! – हमने अपने मन में गुलामी को कैसे पकड़ रखा है, इसके ये कुछ उदाहरण हैं!) तो आजकल इस 'योगा' के वर्ग चलते हैं। उनमे मुख्यतः 'आसन – प्राणायाम' सिखाया जाता है। योग के 'अष्टांग' होते हैं। उनमें से सिर्फ दो ही अंगों का विचार किया जाता है। ये अंग भी ''मानसशास्त्र'' की दृष्टि से नहीं पढ़ाए जाते। वास्तव में देखा जाए तो योग 'भारतीय मानसशास्त्र' (मनोविज्ञान) है। परंतु इस उद्देश्य को पूर्णतया एक तरफ कर दिया गया है। एलोपैथी, होम्योपैथी, नेचरोपैथी के समान, योग को भी एक 'पैथी' बना दिया गया है। भिन्न-भिन्न रोगों के लिए कौन-कौन से आसन उपयोगी हैं और फिर प्राणायाम से भी थोड़ी-बहुत सहायता कैसे ली जा सकती है, इस प्रकार 'पैथी' बनाकर योग का प्रयोग किया जाता है। याने योग का मूल उद्देश्य दूर

रह गया है और उसे विपरीत दिशा में मोड़ दिया गया है।

योग का प्रारंभ होता है 'यम-नियम' से! वर्ग में ये केवल सुनाए जाते हैं। इनका अभ्यास वर्ग में नहीं कराया जाता। पाँच 'यम' हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह। पाँच 'नियम' हैं – शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर-प्रणिधान। महर्षि पतंजलि का कहना है कि ये 'महाव्रत' हैं। इसके माने ये हुए कि ये व्रत कभी नहीं छूटने चाहिए। आसन-प्राणायाम कुछ काल के लिए अभ्यास करने के बाद 'छूट भी गए' तो भी चल सकता है, परंतु यम-नियम महाव्रत हैं। उनका आचरण नित्य होना ही चाहिए। ये कभी न छूटे, इसी उद्देश्य से उन्हें 'सार्वभौम' व्रत कहा जाता है।

यमों का उद्देश्य यही है कि जीवन सामाजिक कार्यों में निर्लेपता से लगा रहे। नियमों का उद्देश्य है मन की शुद्धि। माउली के शब्दों में 'भाव-शुद्धि'! नियमों से हमारी यात्रा भाव-शुद्धि की ओर होती है। इसके माने ये हुए कि योगवासिष्ठकार के अनुसार ही योगशास्त्र भी यही कहता है, ''शरीर से कार्यरत रहो और मन से शुचिर्भूत रहो।'' **इन यम-नियमों के 'कठोर परिपालन' से वासनाओं का उपशम हो जाता है और व्यक्ति दीर्घ आयुष्य! लंबी उम्र प्राप्त करता है।**

राजा पद्म और रानी लीला की कथा

राजा पद्म और लीला की कथा में बताया गया है कि; मृत्यु क्या है? मृत्यु के पीछे क्या होता है? सृष्टि के भीतर सृष्टि और उसके भीतर भी एक और सृष्टि। इस प्रकार अनंत सृष्टियों के होने का वृत्तान्त, वासना के अनुसार आगामी जीवन बनना - इत्यादि अनेक रहस्यों का इस उपाख्यान में वर्णन है :-

एक था राजा। उसका नाम था 'पद्म' ! रानी का नाम था 'लीला'। पद्म और लीला एक दूसरे से बेहद प्रेम करते थे। एक दूसरे को बहुत संभालते थे। राजकर्त्तव्यों के पूरे हो जाने पर राजा-रानी प्रीति का आस्वाद लेते थे। बाग में घूमते, झूले पर झूलते, नौका विहार करते, खाद्य-पेयों का आस्वाद लेते, गपशप करते, घास पर बैठते, चाँदनी मैं बैठते! एक-दूसरे के सहवास में रहते।

धीरे-धीरे युवावस्था ढलने लगी। प्रौढ़ावस्था आ गई; फिर भी उनका प्रेम जरा भी कम नहीं हुआ। अचानक एक बार रानी के ध्यान में आया कि-राजा अब धीरे-धीरे प्रौढ़ होते जा रहे हैं। उनके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ने लगी हैं। यौवन का तेज जाता जा रहा है। रानी चिंता में डूब गई। इसके माने ये हुए कि राजा पद्म अब धीरे-धीरे बूढ़े होने लगे हैं। बुढ़ापे के बाद? मृत्यु! नहीं। राजा पद्म को कभी मौत न आए। जीवन का सारा आनंद ही नष्ट हो जायेगा। दुनियाँ में राजा पद्म 'नहीं रहेंगे', यह विचार भी रानी के लिए असह्य हो गया। उन्होंने अपने निजी-महल में विद्वान, कथा पाठक, तपस्वी साधु-संत अनेकों को बुलाया। उनसे कहा, ''राजा पद्म वृद्ध होते जा रहे हैं। उनके बिना जीवन दुःखद होगा। कुछ उपाय बताइए; जिससे उन्हें मौत न आए।''

अनेकों ने स्पष्ट सलाह दी, ''**बुढ़ापा अनिवार्य है, वैसे ही मृत्यु भी अनिवार्य है।**'' दीर्घायु के लिए कुछ उपाय बताए जा सकते हैं। इससे उनकी आयु-मर्यादा बढ़ेगी। परंतु **एक-न-एक दिन तो उन्हें मरना ही पड़ेगा।** एक तपस्वी ने कहा, ''रानी जी, एक उपाय है। सरस्वती ज्ञान की देवी है। हो सकता है कि वे अमरता का ज्ञान दे सकें।'' सारे लोग चले गए। रानी लीला ने निश्चय किया कि सरस्वती को प्रसन्न कर ही लेंगी।

रानी ने तप शुरू किया। सरस्वती का उन्हें निदिध्यास लगा। दिन में, रात को सपनों में भी वे सरस्वती को मनाती रहीं। इस निदिध्यास से देवी सरस्वती जी प्रसन्न होकर प्रकट हो गई। उन्होंने रानी से पूछा, ''बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?'' रानी ने कहा, ''राजा पद्म की कभी

मृत्यु न हो।'' देवी ने कहा, ''अरी, यह तो असंभव है। इस सृष्टि के कुछ नियम होते हैं। ये नियम भगवान् ने बनाए हैं। देवताओं को भी उन्हें मानना पड़ता है। प्रकृति धर्म के अनुसार शरीर-त्याग अनिवार्य है।'' ''ठीक है'', रानी ने कहा, ''तो देवी ऐसा कीजिए कि राजा पद्म मरने के बाद भी प्राणरूप में यहीं रहें। मुझे उनका अशरीर सहवास प्राप्त होता रहे। एक और प्रार्थना है। जैसे ही मैं आपको याद करूँ; आप मुझको अवश्य दर्शन दें।'' देवी सरस्वती ने दोनों प्रार्थनाएँ मान लीं।

आखिर एक दिन राजा पद्म की मृत्यु हो गई। देवी सरस्वती ने कहा, ''राजा पद्म के प्राण यहीं रहेंगे। तुम उनका कलेवर पुष्प-राशि से ढँक कर रखो।''

रानी लीला ने वैसे ही किया। उसके मन में आया कि राजा के प्राण तो यहीं होंगे। वे अब क्या करते होंगे? उन्होंने देवी सरस्वती का स्मरण किया। देवी सरस्वती प्रकट हो गई। रानी ने प्रश्न किया। देवी हँस दीं। उन्होंने कहा, '' देखो!''

रानी लीला एक अतीन्द्रिय स्थिति में पहुँच गई। उसने देखा कि वहाँ राजा है। कुछ चिन्ह जाने पहचाने लगे। हाँ, हाँ, ये ही हैं राजा पद्म; परंतु राजा ने कहा, ''मैं हूँ राजा विदुर!''

राजा विदुर राज कर रहे थे। बड़े आनंद में थे। परंतु उन पर पड़ोसी राजा ने चढ़ाई की। रानी ने डर कर पूछा, ''अब क्या होगा?'' देवी सरस्वती ने बताया, ''अब राजा विदुर हार जाएँगे। वे युद्ध में मारे जाएँगे।''

रानी ने पूछा, ''ऐसा क्यों?''''राजा विदुर के जैसे कर्म हैं जैसी वासनाएँ हैं, वैसी ही फल प्राप्ति भी होगी। वैसे ही दूसरे राजा का भी कर्म है। अब उसकी जीत होगी।''''क्या राजा विदुर ही राजा पद्म था?''''हाँ, इतना ही नहीं, इसके पहले का जन्म भी देख लो।''

रानी को अतीन्द्रिय दृष्टि से वह पूर्व जन्म भी दिखाई दिया। उस जन्म में राजा पद्म एक ऋषि थे। रानी को बड़ा आश्चर्य हुआ। ''ये ऋषि राजा पद्म क्यों और कैसे बने?'' उन्होंने देवी सरस्वती से पूछा। देवी सरस्वती ने कहा, ''वे थे तो तपस्वी, परंतु वे एक राजा का वैभव देखकर मन ही मन कुढ़ते थे। वे सोचते रहते थे कि मुझे भी ऐसा वैभव प्राप्त हो। इसी कारण वे राजा पद्म बन गए। तपस्वी होने के कारण सुख में वैभव से रहे। अब वे थे तो मूलतः तपस्वी। उन्हें मोक्ष की प्यास लगी। इसी कारण वे विदुर बनकर जन्मे। मुक्त होने के लिए उनका युद्ध में मरना आवश्यक था। यदि 'जय' मिलती तो वह 'मुक्त' न होता। उसकी वासनाएँ तृप्त हो गईं। अब वह और कुछ नहीं चाहता था; क्योंकि मोक्ष का पात्र हो गया है''। थोड़ा रुक कर देवी ने आगे कहा, ''तुम्हारी वासना के कारण यह मुक्त जीवात्मा यहीं रुकी हुई है।'' रानी लीला एकदम होश में आ गई, ''बाप रे! मेरी वासना के कारण। मैं तो बंधन में हूँ ही, इन्हें भी बन्धन में रहना पड़ा''। उन्होंने देवी सरस्वती से हाथ जोड़कर कहा, ''देवी, अब मेरी कोई भी इच्छा, कोई भावना, कोई वासना नहीं बची है। उन्हें मुक्त होने दीजिए और मुझे भी मुक्त होने दें।''

देवी सरस्वती प्रसन्न हो गईं। उन्होंने कहा, ''रानी, तुम वासना में जकड़ी हुई थी। इस वासना के कारण ही राजा पद्म बार-बार जन्म लेता रहा। वासना समाप्त होते ही उसे मोक्ष मिल गया। तुम भी अब मुक्त हो जाओगी। सच्चा प्रेम बाँधता नहीं, मुक्त करता है।''

इस कथा का सार यही है कि योगाभ्यास से, विवेक से, यम-नियमों के परिपालन से वासनाओं का उपशम हो जाता हैं और मोक्ष मिलता है। और भी एक दूसरा विचार है। 'वासनाओं का परित्याग' कहते ही आँखों के सामने भगवी कफनी, रुद्राक्ष-माला, कंधे पर झोली- ऐसा कुछ चित्र आता है अथवा पर्णकुटी में रहने वाला, जन-संपर्क से दूर रहने वाला व्यक्ति आँखों के सामने आ जाता है। वासनाओं का परित्याग करना याने पत्नी, बच्चों, घर-बार, वैभव सब छोड़ना ही चाहिए। ये ही तो आसक्ति के कारण हैं। इस संबंध में योगवासिष्ठकार के विचार भिन्न हैं। उन्होंने इस संदर्भ में भी एक कथा सुनाई है। इसे हम अगले अंक में देखेंगे। (क्रमशः)

मणिपुर वेदविद्यापीठ हेतु भूमि–पूजन

देश की अस्मिता की रक्षा हेतु वेद-सेवा अनिवार्य है!

– योगऋषि बाबा रामदेवजी

''देश की संस्कृति, गौरव एवं पहचान की रक्षा हेतु वेदों का अध्ययन–अध्यापन जारी रहना अनिवार्य है। अतः सभी का यह पुनीत कर्तव्य है कि प्रामाणिक रूप से वेद–सेवा में रत संस्थाओं को आर्थिक–सहयोग करते रहें।''

उक्त विचार योगऋषि बाबा रामदेवजी ने मणिपुर की राजधानी इम्फाल के निकट स्थित चार हजारे नामक ग्राम में दिनांक १४ फरवरी २०१६ को ''मणिपुर वेदविद्यापीठ'' हेतु आयोजित भूमिपूजन समारोह में व्यक्त किये।आपने इस अवसर पर राष्ट्र संत स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज द्वारा संचालित महर्षि वेद व्यास प्रतिष्ठान, पुणे द्वारा विगत दो दशकों से की जा रही प्रामाणिक वेद–सेवा की मुक्त कंठ से प्रशंसा की तथा इस अवसर पर अपनी ओर से महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान को दो करोड़ रुपयों के आर्थिक सहयोग की घोषणा भी की।

ज्ञातव्य है, कि महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे द्वारा सम्पूर्ण देश में २६ वेदविद्यालय संचालित किये जा रहे हैं, 'मणिपुर वेद विद्यापीठ' भी इन्ही में से एक है। इसी विद्यापीठ के भवन निर्माण हेतु भूमि–पूजन का समारोह आयोजित किया गया था।

उल्लेखनीय है कि विद्यापीठ के भवननिर्माण हेतु वहां के कार्की परिवार द्वारा एक एकड़ भूमिदान में दी गई।अतः इस अवसर पर उनका सम्मान भी बाबा रामदेवजी द्वारा किया गया। आयोजन में मणिपुर विधान सभा के विधायक श्री के.एच. देवेन्द्र सिंह जी एवं विधायक श्री टी.एच.चाओबा सिंह जी के साथ ही मणिपुर भाजपा अध्यक्ष एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. राधागोविंद थोंडाम की सम्माननीय उपस्थिति भी दर्ज की गई। इस अवसर पर करीब २००० दर्शक उपस्थित थे।

– श्री अविनाश मोरे

अभिनंदन

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय (नागपुर) की ओर से अप्रैल २०१६ में ली गई बी.ए. वेदविद्या परीक्षा में संत गुलाबराव महाराज वैदिक महाविद्यालय, आलंदी के छात्र **नचिकेत सुनीलराव भाले** प्रथम श्रेणी में प्रथम क्रमांक से उत्तीर्ण हुए हैं। आपने संस्कृत व्याकरण, न्याय और पूर्वमीमांसा इन शास्त्रोंका भी विशेष रुचि लेकर अध्ययन किया हैं।

बी.ए. वेदविद्या परीक्षा में शामिल हुए अन्य सभी छात्रों ने उज्ज्वल यश प्राप्त किया है। **श्री. हरिओम चंदुलालजी शर्मा,** बी.ए. द्वितीय वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए है।

बी.ए. के प्रथम वर्ष के सभी छात्र अब द्वितीय वर्ष का अध्ययन कर रहे हैं।

प.पू. गुरुदेव की छात्रों से एक बातचीत

जीवन एक चुनौती है इसे स्वीकार कीजिये

लेकिन कैसे?

विगत दिनों प.पू.गुरुदेव एक एकेडमी में पधारे थे। वहां के छात्रों को प्रदत्त प्रवचन का सार-संक्षेप यहाँ युवा-पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

आज मुझे अच्छा लग रहा है; क्योंकि आज मैं छात्रों के बीच आया हूँ। मैं भी अपने आपको एक छात्र मानता हूँ। आपके सामने 'सर' ने जो मेरा वर्णन किया, उसमें अतिशयोक्ति अलंकार बहुत था। श्री झावरे सर ने कहा– life is a chance, catch it. मित्रों, यह ऐसा अवसर है, आप भाग्यवान हैं, जो आपको मिला है। मैं विचार करता हूँ देहाती छात्रों का, वनवासी छात्रों का, जिनको कोई सुविधा नहीं है। पहली बात यह कि आप बहुत पढ़े लिखे हैं, दूसरी बात यह कि आप पुणे जैसे शहर में हैं। मैं सारे संसार में घूमता हूँ; लेकिन पुणे से मैं बहुत प्रेम करता हूँ। I like it. It is a city of learning आप पुणे में आये हैं, आप अपने को भाग्यवान समझें। और झावरे सर के एकेडमी में आए हो, इसलिए भी आप अपने को और भी भाग्यवान समझें। मनुष्य को अपने जीवन में अध्ययन कैसे करना चाहिए, किया हुआ अध्ययन लोगों के सामने कैसा रखना चाहिए? यह प्रतिबद्धता की बात जैसी यहाँ मिलेगी, वैसी शायद ही अन्यत्र मिले।

आप यहाँ आकर अपने जीवन को बनाना चाहते हैं तो पुणे अच्छा है और अपने जीवन को बिगाड़ना चाहते हैं तो भी पुणे जैसा शहर आपको नहीं मिलेगा। इसलिए एक बात और जोड़ना चाहता हूँ। Your life is a challenge, accept it. जो आपकी उम्र है, जिस युवावस्था में आप हैं, जैसा पुणे का वातावरण है, पढ़ना भी एक चुनौती है। पढ़ने में मन लगाना भी एक चुनौती है।

एक बात का अवश्य ध्यान रखना। आपके सामने २–४ वर्ष हैं। इन वर्षों में आप अपने जीवन के परमोच्च उत्कर्ष के लिए उत्थान भी कर सकते हैं या आप अपना जीवन बरबाद भी कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहूँगा। आपके भीतर यह भावना जागृत रहे, ऐसी आकांक्षा रखूँगा कि आप केवल अपने घर के लोगों को, माता-पिता को याद कीजिए। उन्होंने आपको बहुत विश्वास के साथ यहाँ भेजा है। बहुत कष्ट सहकर आपको भेजा है। उन्होंने अपने मन में बहुत सपने सजाए हैं कि मेरा पुत्र अथवा कन्या पुणे में इतना बड़ा अवसर पाकर अध्ययन करेंगे, वे उनके जीवन को तो प्रकाशमान करेंगे ही लेकिन हमारे जीवन में भी आनंद की वृद्धि करेंगे। आप उन लोगों को भूलियेगा मत। यदि आप जीवन में महान् लक्ष्य प्राप्त करना चाहते हैं, घर के लोगों की

आशाएँ पूर्ण करना चाहते हैं, तो अंतःकरण में निश्चय कीजिएगा कि मुझे मेरे जीवन में कुछ ना कुछ कर दिखाना है। मुझे छोटा नहीं रहना है। मुझे महान् बनकर के दिखाना है। आप अंतःकरण में संकल्प करेंगे तो you will find a way. किसी ने नोट्स पढ़के,गाईड्स पढ़के, परीक्षा में go through जाने के लिए नहीं पढ़ना है। मुझे सामान्य जीवन नहीं बिताना है। इस academy से जाते हुए भी किसी प्रकार मेरा नाम रोशन होकर जाए, इस प्रकार का लक्ष्य हमारे सामने होना चाहिए। सामने हो महान् लक्ष्य! जिनके अंतःकरण में महान् लक्ष्य नहीं होते, वे कभी महान् काम कर नहीं सकते। मित्रों, सपने देखने चाहिए। महानता के सपने देखने चाहिए। ऐसा सपना हमारे देश के महान गौरव छत्रपति शिवाजी महाराज ने देखा। १४ वर्ष की अवस्था में देखा कि मैं एक ऐसा राज्य खड़ा करूंगा जो देश के निवासियों का होगा। ऐसा एक सपना अब्राहम लिंकन ने देखा, मैं अमेरिका का राष्ट्रपति बनूंगा। वे बहुत छोटे समाज से, घर से आये थे। बहुत आपदाओं को झेलकर उन्हें अपने मार्ग पर आगे बढना पड़ा। ऐसा एक सपना हमारे पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने देखा। मैं space man बनूंगा। रामेश्वरम की भूमि पर चने बेचकर कमाई करने वाला हमारा सबसे योग्य राष्ट्रपति बना। उसके पीछे महानता की आकांक्षा थी।

डिक विटिंग्टन घोड़ा हाँकने वाला था। उसने चर्च के bell को सुना। घोड़ा हाँकते हाँकते उसके मन में लंडन का मेयर बनने का कुछ विचार आया। घोड़ा हाँकने वाला क्या मेयर बन सकता है? क्यूँ नहीं? तो उसके लिए मुझे क्या करना चाहिए? उसके जीवन की दिशा बदल गयी।

जिनके अंतःकरण में महान लक्ष्य नहीं होते, वे कभी महान काम कर नहीं सकते। मित्रों, सपने देखने चाहिए। महानता के सपने देखने चाहिए।

लंडन के इतिहास में वह दिन आया जब यह घोड़ा हाँकने वाला लंडन का मेयर बन के बैठा। यह केवल इच्छाशक्ति के बलपर और महान् सपने देखने से होता है। ऐसा सपना हमारे सामने होना चाहिए। मुझे मेरा जीवन महान बनाना है। मुझे अपने परिवार को आगे लाना है। मुझे समाज का उत्थान करना है। जब तक कोई महान् लक्ष्य आपके सामने नहीं होगा, तो आप छोटे बनकर ही रह जाएंगे। हमारे सच्चे मित्र कौन हुआ करते हैं?

पुस्तकें ही हमारी सच्ची मित्र हैः–

महापुरुषों ने कहा – ग्रंथ ही हमारे सबसे सच्चे मित्र हैं। आंबेडकरजी ने स्वयं अपना जीवन इतना श्रेष्ठ बनाया, सारे देश के संविधान के रचयिता के रूप में वे देखे गये। अगर आपने आंबेडकरजी की जीवनी नहीं पढ़ी हो, तो आप अवश्य पढ़िए। उनकी जीवनी से आपको बहुत प्रेरणा मिल सकती है। हमें पता है क्या उन्होंने पूरे जीवन में कभी भी रात दो बजे से पहले निद्रा का सुख नहीं लिया। ज्ञान का यह तपस्वी अपने अंतिम दिन तक रात–दिन पढ़ता रहा। विदेश गये, वहाँ रहे। वहाँ से आते समय वे और कुछ नहीं लाये, केवल ग्रंथ लाए। ग्रंथों का इतना संग्रह किया कि उन ग्रंथों को रखने के लिए उन्हें स्वयं एक नया भवन बनाना पड़ा। लोगों में आज ऐसी स्थिति है कि घर की सजावट करने के लिए महिलाओं को पुस्तकें लानी पड़ती हैं। Interior decoration में पुस्तकों की भी सजावट हुआ करती है। आंबेडकरजी पुस्तकें लाये ही नहीं, उनका गहराई से अध्ययन भी किया। एक उपेक्षित परिवार से, अनेक बाधाओं से गुजरे परिवार से वे आये थे। लेकिन अंतःकरण में एक आकांक्षा थी कि समाज का उत्थान करना है। उस आकांक्षा ने उन्हें महान बनाया। उस पागलपन ने उन्हे महान बनाया। लेकिन उसके साथ एक योजना थी, निश्चय था। महान बनने के लिए मुझे पढ़ना होगा। लोगों के सामने एक effective personality के रूप में आ नही सकूंगा, जब

शेष पृष्ठ २८ पर.....

२१ जून, योगदिवस पर विशेष

“पूर्णयोग बोधिनी गीता”

विश्व द्वारा योग-दिवस मनाने का अर्थ है :-

१. भारत को विश्व गुरु पद पर आसीन करना और
२. गीता को विश्व धर्म-ग्रंथ घोषित करने की दिशा में उठाया गया एक ठोस कदम!

गीता साधना शिविर के अंतर्गत, सायंकालीन चर्चा सत्र जो चलता है, उसमें अक्सर कोई नया विषय, अलग-अलग प्रकार का लेकर के, और थोड़ा चिंतन करने की हम लोगों की परिपाटी रही है। इससे पूर्व जो लोग आये हैं, उनको पता है, पिछले वर्ष हम लोगों ने वृत्रासुर की चतु:सूत्री देखी थी। उसके पूर्व और कुछ देखा था। विवेक चूड़ामणि देखने का मेरा विचार था, कभी योगसूत्र देखने का भी था; लेकिन इस वर्ष गीता साधना शिविर के सायंकालीन सत्र में मैं भगवद्गीता का ही चिंतन, अलग ढंग से आपके सामने रखने का विचार कर रहा हूँ। इसका एक कारण यह है कि कुछ महीनों पूर्व 'पूर्ण योग महोत्सव' हुआ था, 'अंतरराष्ट्रीय पूर्णयोग महोत्सव'। उस महोत्सव में मुझे, '**भगवद्गीता का योग**' विषय को लेकर के दो दिन बोलना था। बात तो बड़ी सीधी-सी लगती थी; लेकिन जिस दिन मुझे बोलना था, उस दिन प्रात:काल पूजा करके उठने के पश्चात् अचानक मेरे मन में कुछ दूसरे ही विचार आने लग गए। मेरे विचारों की दिशा ही बदल गई और पुनः पुनः मेरा ध्यान उस घटना की ओर जाने लगा, जो निकट भविष्य में घटने वाली थी।

मानव-मात्र का धर्मग्रंथ है - गीता :-

आप सब लोग जानते हैं; २१ जून, '**योग दिवस**' के रूप में हमारा देश भी मनाएगा और बड़े आनंद का विषय है कि संसार के लगभग समस्त देशों ने उमंग से इसमें सहभागी होकर, 'इन्टरनेशनल डे फॉर योगा', मनाने का निश्चय किया है। इसमें जो-जो लोग कारण रहे, आप सब उन्हें जानते हैं। यह एक बड़ी स्वागत योग्य घटना है। ये घटना घटने वाली है;

लेकिन उसकी घोषणा, पुणे के योग महोत्सव के पूर्व हो चुकी थी। मेरे मन में विचार आया, ''ये क्या हो रहा है?''। और जो ये विचार आया, तो मुझे हमारे देश के उत्थान के अग्रदूत स्वामी विवेकानंद महाराज की वो घोषणा याद आयी, जब उन्होंने कहा था, ''मैं देख रहा हूँ, भारतमाता जग रही है और जगी हुई भारतमाता, सारे विश्व के गुरु पद पर आसीन हो रही है।'' यह स्वामी विवेकानंद महाराज की घोषणा है। यह उनका प्रोफेटिक ड्रीम (Prophetic dream) था। अर्थात् भविष्य-कालीन एक सपना। भविष्यकाल में प्रवेश करके उनके द्वारा किया गया जो ये आकलन था, उसके साथ-साथ, एक और भी घटना मैं आपको बतलाना चाहता हूँ। जिनको मैं संसार का सर्वोत्कृष्ट संत मानता हूँ, संतों में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता; क्योंकि संतों में तुलना नहीं होती है। संत अंतरंग से सब एक ही होते हैं। ''या देवी सर्व भूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता''- ऐसा कहने पर भी अपनी माता का एक विशेष स्थान होता है। उसी प्रकार, सारे संत अंतरंग से एकरूप होने पर भी, आज की मेरी समस्याओं का समाधान करने के लिए; जिसकी मुझे सर्वाधिक आवश्यकता है; उसे मैं बड़ा मानूँ, तो इसमें कोई एतराज की बात नहीं है। और यहाँ पर जब ''मैं'' शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, तो एक साधक की भूमिका से कर रहा हूँ। जैसे संत श्री गुलाबराव महाराज, मेरी जटिल समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने में मुझे अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं, उसी प्रकार जिस किसी की बुद्धि में, अनेक प्रकार के संशय निर्माण हुए होंगे, उन सारे संशयों का निवारण करने वाले वास्तविक जगद्गुरु संत श्री गुलाबराव महाराज रहेंगे, ऐसा जब मैं कहता हूँ, तब एक बात का मैं अंतर करता हूँ। जगद्गुरु नाम का लेबल लगा करके विचरण करने वाले लोग अलग और वास्तव में, जिनके ज्ञान के प्रकाश में संसार के किसी भी धर्म तथा संप्रदाय का कोई भी साधक, जिनकी वाणी का आश्रय लेकर के वास्तव में अपने जीवन का समग्र साधन पूर्ण कर सकता है, ऐसी सामर्थ्य उनकी वाणी में है। ऐसे हर साधक की दृष्टि से, मैं यह बात बोलता हूँ कि वे सबसे महान संत रहे हैं। उनकी महत्ता ऐसी है। उन संत श्री गुलाबराव महाराज का एक वाक्य है, वे इसे बार-बार कहा करते थे। वे अपनी भाषा में बोलते, ''आगे आने वाले विश्व का बायबल भगवद्गीता ही होगा। अब आगे आनेवाले समाज का, विश्व का, आगे आनेवाली पीढ़ियों का, सही धर्म ग्रंथ भगवद्गीता होगी, ऐसा उनका इस वाक्य के द्वारा प्रतिपादन है। अब जब मैं २१ जून के परिप्रेक्ष्य में, इन दोनो घटनाओं को देखता हूँ, तो मुझे उस दिन कुछ और ही विचार आने लगे।

योग केवल कसरतों का नाम नहीं है :-

'योग दिवस' मनाया जाएगा, बात ठीक है। योग दिवस मनाया जाएगा; इसमें एक बात तो स्पष्ट है कि सारा संसार योग को अपने जीवन के साधन के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हुआ है। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि योग कभी भी केवल कसरतों का नाम नहीं रहा है। **'योग'** नाम जहाँ भी आएगा, वहाँ पर उसमें आध्यात्मिक भाव तो रहेगा ही रहेगा। और इसलिए आध्यात्मिक दृष्टि से सारा संसार जिस दिन योग दिवस मनाएगा, उस दिन स्वामी विवेकानंद की वह घोषणा पूर्ण हो जाएगी कि मेरी भारतमाता सारे संसार के गुरुपद पर आसीन हो रही है। सारा विश्व योगदिवस मनाने वाला है।

जब महिला दिवस मानाया जाता है; तो उसमें आध्यात्मिक आशय नहीं होता, सामाजिक आशय होता है। जब अन्यान्य दिन मनाए जाते है, पता नहीं कितने मनाए जाते हैं, उन सारे दिनों में कहीं पर भी आध्यात्मिक आशय नहीं होता, सामाजिक आशय ही होते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण दिन वह प्रकृति के लिए है। लेकिन योग का सीधा अध्यात्म से संबंध है और **योग संसार को भारत की देन है।** इसलिए जिस दिन सारा संसार योग-दिवस मनाएगा, उस दिन भारतमाता विश्व के गुरुपद सिंहासन पर विराजमान हो जाएगी। ये इसका सीधा-सीधा अर्थ है।

योग तथा गीता का अन्योन्याश्रित संबंध :–

अब दूसरा जो प्रसंग है, संत श्री गुलाबराव महाराज ने कहा, ''सारे संसार का धर्मग्रंथ आगे चल कर के भगवद्‌गीता होगा।'' मैं ये विचार करने लगा कि 'योग–दिवस' मनाने और भगवद्‌गीता का क्या संबंध है? इस प्रश्न ने मुझे स्वयं अचंभित कर डाला जब मेरे ध्यान में आया कि अरे, योग दिवस के साथ यदि किसी ग्रंथ का सीधा संबंध है, तो वह केवल भगवद्‌गीता का ही है।

'योग' कहने पर क्या आप पतञ्जलि को मानेंगे? पातञ्जल योग सूत्रों को मानेंगे, हठयोग प्रदीपिका को मानेंगे, घेरंड संहिता को मानेंगे, योगवासिष्ठ को मानेंगे, किसको मानेंगे? ऐसा जब विचार किया जाता है तब सारे संसार को परिपूर्ण मार्गदर्शन देनेवाला योगशास्त्र यदि कहीं पर कहा गया है; तो ध्यान रखिएगा, वह केवल भगवद्‌गीता, भगवद्‌गीता और भगवद्‌गीता ही है। इसलिए जिस दिन विश्व में योग दिवस मनाया जाएगा, उस दिन भगवद्‌गीता सारे संसार का सही धर्मग्रंथ हो जाएगा।

समग्र योग का विवेचन केवल गीता में ही है!

ये बात लोगों के ध्यान में तुरंत नहीं आएगी। लेकिन जो योग दिवस मनाने जा रहे है; उस योग दिवस में जो 'योग' शब्द है, उसका जब लोग गहराई के साथ विचार करने लगेंगे, तो उनके ध्यान में आएगा कि योग कहते ही, अपने आप भगवद्‌गीता हमारे गले में आ ही जाती है; क्योंकि संपूर्ण योग का प्रतिपादन केवल भगवद्‌गीता में है, पतञ्जलि में नहीं है, हठयोग प्रदीपिका में नहीं है, अन्य किसी ग्रंथ में भी नहीं है। वह केवल भगवद्‌गीता में है। यह जो विचार मेरे मन में आया; तब मैं तो और उत्सुक हो गया। भगवद्‌गीता को अध्यायों के अनुसार जब मैं टटोलने लगा; तो ध्यान में आया कि भगवद्‌गीता से अधिक श्रेष्ठ योग का अन्य ग्रंथ हो ही नहीं सकता। फिर एक बात और भी तो है, जब भगवद्‌गीता की ओर हम देखते हैं, तो भगवद्‌गीता को कौनसे शास्त्र का ग्रंथ कहा गया है? भगवद्‌गीता की पुष्पिका आप सब लोग पढ़ते हैं। उस पुष्पिका में आप पढ़ते हैं 'इति श्रीमद्‌भगवद्‌गीता–सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे फिर जिस अध्याय का जो नाम है उस अध्याय का नाम वहाँ पर आया। लेकिन संपूर्ण भगवद्‌गीता को योगशास्त्र कहा गया है। केवल ब्रह्मविद्या भी नहीं है, ब्रह्मविद्या आपको चाहिए तो वह उपनिषदों में मिलेगी। उपनिषदों में ब्रह्मविद्या है। उपनिषद ब्रह्मविद्या के ही प्रतिपादक हैं। लेकिन वह ब्रह्मविद्या Applied science के रूप में यदि कहीं मिलती है तो वह केवल भगवद्‌गीता में मिलती है। इसलिए ब्रह्मविद्या उपनिषदों की Theory है। भगवद्‌गीताकार उस थिअरी को भी अपनाते हैं। उपनिषदों के, वेदांत के सारे सिद्धांतों को गीताकार ने अपना लिया, लेकिन उनको Practical life में उतारने के लिए क्या क्या उपाय करने चाहिए यह बतला करके भगवद्‌गीता के साथ योगशास्त्र शब्द भी जोड़ लिया। ''ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे'' It is applied science. ब्रह्मविद्या ब्रह्मविद्या है और वह आदरणीय है। और जैसा कि आज प्रात: काल हम लोगों ने देखा कि ये सारे सिद्धांत जो भगवद्‌गीता में हैं वे इधर–उधर से नहीं आए हैं, वे सारे वेद के सिद्धांत हैं, वेदांत के सिद्धांत हैं। कहीं–कहीं तो उपनिषदों का भाषांतर ही आपको लगेगा। कठोपनिषद का तो स्थान–स्थान पर आपको उसमें अनुवाद दिखेगा। तो उपनिषदकार जो बातें बतलाते हैं, वे ही बातें भगवद्‌गीता में हैं। इसीलिए तो कहा गया कि सारे

उपनिषदों के, वेदांत के सारे सिद्धांतों को गीताकार ने अपना लिया, लेकिन उनको Practical life में उतारने के लिए क्या क्या उपाय करने चाहिए ये बतला करके भगवद्‌गीता के साथ योगशास्त्र शब्द भी जोड़ लिया। ''ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे'' It is applied science.

उपनिषद गोरूप हैं और भगवद्गीता; उन गौवों का, भगवान् गोपालकृष्ण नाम के ग्वाले के द्वारा निकाला गया दूध है।

प्रेम की पराकाष्ठा

अब भगवान् गोपाल तो है ही, उनको दोहना बड़ा अच्छा आता है। बचपन में गौवें दोही और बड़े होने के बाद अपनी प्रतिभा से और अपनी कृपा से उपनिषद रूपी गौवों को भी दोह दिया और हम 'लोगों को दुग्धम् गीतामृतम् महत्' यह भगवद्गीता रूपी दुग्ध प्राप्त हो गया। इसमें निमित्त बना है अर्जुन! इसलिए उसको बछड़ा कहा। 'पार्थो वत्स: सुधीर्भोक्ता दुग्धम् गीतामृतम् महत्'। गोमाता दूध देती है वह हमारे लिए नहीं देती है, गोमाता दूध छोड़ती है अपने बछड़े के लिए। हम लोग चालाकी से क्या करते हैं, ऐसे ही जाकर गैय्या को दुहते नहीं है, पहले उसके बछड़े को वहाँ ले जाते हैं और जब बछड़ा गोमाता का स्तनपान करता है, तो गाय का दूध छूटता है। चालाक आदमी बछडे को दूर करता है और दूध अपने लिये दुह लेता है।

तो, गोमाता का भाव उमड़ करके, वह पूरा दूध छोड़ दे; इसलिये एक बछड़े की आवश्यकता होती है, भगवान् शायद हमारे लिये भगवद्गीता का उपदेश नहीं भी करते, लेकिन अर्जुन उनका इतना प्यारा-प्यारा बछड़ा है, भगवान् जितना अर्जुन को मानते हैं, उतना किसी को नहीं मानते हैं। ये हमारे भक्त लोग गोपी गोपी करते हैं, लेकिन सत्य बात बतलाता हूँ आपको, भगवान् श्रीकृष्णने यदि सर्वाधिक प्रेम किसीसे किया है, तो अर्जुन से किया है। भगवान् ''**इष्टोऽसि मे दृढ़मिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।**'' इष्टोऽसि मे दृढमिति है न, इसका सीधा अंग्रेजी में अनुवाद होगा "I love you a lot." अब यह शब्दावली तो आपको पता है। यह शब्दावली भगवान् अर्जुन के लिये प्रयुक्त करते हैं।

'**इष्टोऽसि मे दृढ़मिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।**' एक प्रसंग और बतला देता हूँ; ताकि आपको ध्यान में आ जाय कि अर्जुन किस स्तर का नरोत्तम है। प्रसंग महाभारत का है। महाभारत में एक स्थान (वह स्थान है- खांडववन) का दहन करना था। उस स्थान पर अग्निदेव प्रकट हुए तथा अर्जुन और भगवान् श्रीकृष्ण से कहा, ''आप लोग यदि मुझसे कुछ चाहते हैं तो मांग सकते हैं। तो अर्जुन को तो अच्छा लगा। यदि कोई भी आपसे कहे कि आपको जो चाहे वो मांगो और देने वाला समर्थ हो, अब देनेवाला मेरे जैसा हो तो आप विचार करेंगे कि इनसे क्या मांगना, इनके पास तो कुछ भी नहीं। लेकिन देने वाला यदि समर्थ है और कुछ भी दे सकता है; तो आदमी दिल खोल करके मांगेगा। तो अर्जुन ने तो चान्स ले लिया। अर्जुन ने कहा कि, 'मुझे दिव्यास्त्र चाहिए'। अब अर्जुन योद्धा है। योद्धा को तो अधिक से अधिक, अच्छे से अच्छे अस्त्र मिलते जाएँ, इसी में उसकी तरक्की है, उन्नति है। अर्जुन ने कहा, ''मुझे दिव्यास्त्र चाहिए'' तो अग्नि ने कहा, ''कोई बात नहीं, मैं तुम्हें अभी गाण्डीव देता हूँ। गाण्डीव धनुष तुम्हारे पास रहेगा और तुम्हें एक सुंदर दिव्य रथ भी मिल जाएगा, लेकिन अन्य जो दिव्यास्त्र हैं, वे शिवजी के द्वारा तुम्हें प्राप्त हो जाएंगे, ऐसी भविष्यवाणी मैं करता हूँ। वे तुम्हे मिलेंगे पर वे मैं नहीं दे सकता, वह यथा समय भगवान् पशुपतिनाथ देंगे।'' यह तो हो गई अर्जुन की बात।

भगवान् कृष्ण से पूछा अग्नि देव पर वे ने, ''बोलिये, आप क्या चाहते हैं महाराज''? भगवान् कृष्ण मांगे ऐसी क्या वस्तु होगी? कृष्ण भगवान् ने जो मांगा है वह बतलाता हूँ मैं आपको। उन्होंने केवल एक वाक्य कहा, ''**अग्नि देव मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये, इतना केवल वरदान मुझे दे दो कि अर्जुन का और मेरा प्रेम अखंड बना रहे। ''वासुदेवोऽपि जग्राह प्रीतिम् पार्थेन शाश्वति''।** भगवान् श्रीकृष्ण कहते है, ''पार्थेन शाश्वतिं प्रीतिं अहम् वाच्छामि। मेरा और अर्जुन का प्रेम अखंड बना रहे। अरे, यह कौन बोल रहा है? यह भगवान् बोल रहे हैं। अर्जुन ने यह नहीं कहा कि मुझे कृष्ण का प्रेम चाहिए। वास्तव में अर्जुन यह मांगता तो हम लोगों को

विशेष बात नहीं लगती; लेकिन कृष्ण भगवान् ने ये मांगा। इसका अर्थ क्या है? इसका एक दूसरा अर्थ होता है कि मनुष्य को अपना जीवन उत्तरोत्तर अधिकाधिक अच्छा बनाते रहना चाहिए।

सद्‌गुणों का मूल्याकनः–

एक समय आएगा जब मनुष्य के सारे सद्‌गुणों का Appreciation तो होगा ही होगा; लेकिन यदि कोई आज यह कहे कि अच्छे गुणों का मुझे क्या करना है? चलता है, अपने यहाँ एक बड़ा Popular शब्द है – चलता है Adjust कर लो, चलता है। यह चलता है कहने वाले और Adjust करने वाले जो लोग है न, ये निरंतर साधारण लोग बने रहते हैं। मैं उनको बुरा तो नहीं कहूंगा, पर वे साधारण बने रहते हैं। लेकिन जो लोग अपने जीवन में कुछ नियमों का पालन करते हैं और अपने जीवन को अधिकाधिक सुंदर बनाते रहते हैं, अधिकाधिक उपयोगी बनाते रहते हैं, अधिकाधिक ज्ञानवान बनाते रहते हैं, अधिकाधिक शीलवान बनाते रहते हैं, उन लोगों के इस साधन का कभी न कभी– यह ईश्वर का विधान है – एक समय ऐसा आएगा कि आपके सारे के सारे सद्‌गुणों का मूल्यांकन होगा। उस मूल्यांकन के लिये सद्‌गुण नहीं बढ़ाने हैं, हमें तो अपने जीवन की साधना के रूप में उसे करना है। लेकिन यह विधि का व्यवस्थित विधान है। यदि आप ऐसा करते रहेंगे, तो एक दिन ऐसा आएगा, आपके सारे सद्‌गुणों का मूल्यांकन होगा।

अर्जुन एक समर्पित भक्त –

अर्जुन ने अपना जीवन इतना सुंदर बनाया कि यदि इस घटना के पूर्व जो घटनाएँ घटी हैं; उन सारी बातोंको बतलाते रहूंगा, तो अर्जुन के ही बारे में मुझे पाँच–सात दिन बोलना पड़ेगा। अर्जुन के जीवन सर्वोत्तम वर्णन यदि कहीं मिलेगा, तो वह महाभारत में कुछ मिलेगा और उससे भी बढ़िया ज्ञानेश्वरी में मिलेगा। ज्ञानेश्वर महाराज, जो भगवद्‌गीता के भाष्यकार हैं, भगवद्‌गीता के किसी भी भाष्यकार ने वक्ता और श्रोता के संबंध पर प्रकाश नहीं डाला है। वक्ता श्रोता को कितना चाहता है और वह श्रोता भगवद्‌गीता सुननेवाला अर्जुन, भगवान् के प्रति कितना समर्पित है, इसके ऊपर समग्र प्रकाश यदि आपको कहीं मिलेगा, तो वो सबसे बढ़िया ज्ञानेश्वरी में मिलेगा।

अरे! श्रोता से इतना प्रेम जब वक्ता करेगा, शिष्य से इतना प्रेम जब गुरु करेगा, तभी तो जाकर के अपने हृदय की सारी बातें खोल करके उनको कहेगा। आप लोगोंसे एक प्रश्न पूछता हूँ। आपकी ज्वेलरी आप किसको दिखाते हैं? ज्वेलरी तो वह लोगों को दिखाते हैं। वो तो लोगों को दिखाने के लिये ही होती है। लेकिन सारे के सारे गहने मैंने कहाँ पर रखे हैं; वह स्थान आप किस–किसको दिखाते हैं, बोलिए? वह तो आप उसी को दिखाएंगे, जिसका आपको पूर्ण विश्वास होगा। इतना विश्वास कि आप उससे अपने को भिन्न नहीं मानेंगे। भगवान् अर्जुन से इतना प्रेम करते हैं। इसलिए अर्जुन सर्वश्रेष्ठ बछड़ा हो गया। और भगवान् ने अर्जुन के निमित्त से; उनको देने जैसा जो कुछ था, सब दे दिया। इसलिये भगवान् आदि शंकराचार्य महाराज कहते हैं, ''अर्जुनं निमित्तीकृत्य'' अर्जुन को निमित्त बना करके संसार के कल्याण के लिए भगवान् ने अपना सारा ज्ञान गीता में दे दिया।

मनुष्य का शरीर ही कुरुक्षेत्र है।

तो यह जो ज्ञान, अर्जुन को निमित्त बना करके भगवान् ने गीता में दिया, वह किसके लिये दिया? हिमालय में बैठे हुए किसी योगी के लिये नहीं दिया। एकांत में बैठ करके साधन करनेवाले के लिये नहीं दिया। वे करते हैं तो ठीक है। इसीलिए भगवान् ने समरांगण का प्रसंग चुना। मानव जीवन की आपाधापी जो कुछ भी हो, लेकिन मानव जीवन में संघर्ष की पराकाष्ठा होती है समरांगण में। अपनी सारी शक्तियाँ लगाकर के लोग वहाँ पर इकठ्ठा होते हैं और मरने मारने की बारी होती है। और यह पता नहीं होता कि आज क्या होगा; ऐसी स्थिति होती है। ऐसी स्थिति में भी मनुष्य को योगी होना चाहिए, यह

शेष पृष्ठ ३७ पर.....

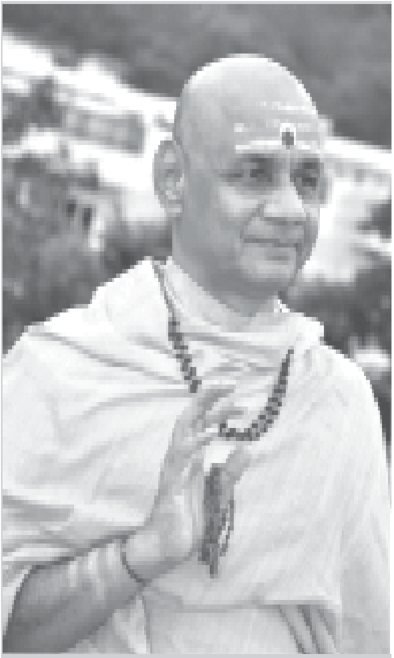

हम लोग अपने-अपने क्षेत्र में अनेक ग्रन्थों को पढ़ते रहते हैं और बुद्धिमानी से उसका उपयोग भी अपने व्यवहार में करने का प्रयास हैं। हमारे शास्त्रकारों ने इस सारी विद्या को अ-विद्या (व्यावहारिक विद्या) कहा है। मैंने फिजिक्स पढ़ा, केमिस्ट्री पढ़ी, मैथेमेटिक्स पढ़ी, संगीत पढ़ा, आयुर्वेद पढ़ा, व्याकरण पढ़ी, न्यायशास्त्र पढ़ा, तर्कादि पढ़ा। सब कुछ पढ़ा। पढ़ा तो अच्छा किया। बुरा नहीं किया, लेकिन इतना पढ़ने से सब कुछ मैं जान गया-ऐसा नहीं हो सकता। ये है व्यावहारिक विद्या और उपनिषद्कार व्यावहारिक विद्या को अविद्या कहते हैं। उसको भी जानना चाहिए; नहीं तो व्यवहार कैसे करेंगे?

अ-विद्या से मतलब व्यावहारिक विद्या; जो मृत्युलोक की सारी कामनायें पूरी करती है। डॉक्टरी पढ़ लिया। उसके बल पर मैंने पैसा कमाया। मेरा घर-प्रपञ्च, परिवार चल गया। अच्छी बात है। गलत बात तो है नहीं। उपनिषद्कार कहते हैं कि इस अ-विद्या को भी जानना चाहिए।

भागवत श्रवण का अर्थ है सुनी हुई बातों को जीवन में उतारना

पारमार्थिक ज्ञान को विद्या कहते हैं और व्यावहारिक ज्ञान को अ-विद्या कहते हैं। अ-विद्या को भी जानो, विद्या को भी जानो। कुछ लोग केवल विद्या को जानते हैं और व्यवहार में कुशल नहीं होते। वे अच्छे तो होते ही हैं, लेकिन लोगों की दृष्टि में बावले होते हैं। इसलिये दोनों विद्याओं को जानने वाला अधिक सफल रहता है। केवल व्यावहारिक-विद्या के ग्रन्थों को जाना और पारमार्थिक ग्रन्थों को नहीं जाना; तो जीवन अधूरा ही रह गया।

मुख्य बात यहाँ पर एक यह भी है कि पारमार्थिक ग्रन्थों को पढ़ने से ही पूरा काम नहीं होगा; जब तक श्रीमद्भागवतजी का अध्ययन नहीं करेंगे। अन्य पुराणों को पढ़ लिया। उपनिषदों को पढ़ लिया, लेकिन श्रीमद्भागवत को नहीं जाना तो भी बात अधूरी ही रह गयी।

अनेक बार तो हमारे पारमार्थिक ग्रन्थ भी हमें भ्रमित कर देते हैं। शिवपुराण पढ़ते हैं तो लगता है कि बस शिवजी ही सब कुछ हैं। देवी-भागवत पढ़ते हैं तो लगता है कि देवी के बिना तो बस कुछ भी नहीं है और गणेश-पुराण, मुद्गल-पुराण पढ़ते हैं, तो लगता है कि गणपति के बिना तो कुछ भी नहीं चल सकता। **हम चाहे जिस पुराण को पढ़ें,**

हम प्रपंच में प्रयत्नवादी हैं तो परमार्थ में प्रारब्धवादी क्यों हो जाते हैं?

कहा– ''महाराज! बाकी शास्त्रों के न पढ़ने के कारण, मेरा तीन चौथाई जीवन बेकार गया होगा, लेकिन एक तैरना न सीखने के कारण आपका तो पूरा जीवन ही अब बेकार होने वाला है।''

हम भी यही कहते हैं – तैरना सीखा कि नहीं? ध्यान रखना, इस जीवन के अन्तकाल में जब प्राण डगमगाये, मन चंचल होगा, अन्तिम समय की आँधी चलेगी, उस समय भी जिसने अपने चित्त को स्थिर करके परमात्मा श्रीकृष्ण में एकाग्र रखना सीखा, वही भवसागर पार कर सकेगा, बाकी तो सब डूबे। इसलिये उस तैरने की विद्या का नाम 'श्रीमद्भागवत' है। बाकी विद्यायें व्यर्थ हैं, ऐसी बात नहीं। बाकी विद्यायें उपयोगी होने पर भी यह विद्या परमोपयोगी है।

भगवान् सनत्कुमारजी महाराज भागवतजी का वर्णन करते हुए कहते है कि धन्य है वह घर, जहाँ पर श्रीमद्भागवत का ग्रन्थ है। धन्य है वह घर, जहाँ पर श्रीमद्भागवत के किसी अंश का पाठ होता है। हमारे पूर्वजों में एक परम्परा चली थी। रोज घर में भगवान् को भागवतजी का एक अध्याय सुनाया जाता था। केवल सप्ताह का समय हो और कोई आयोजन हो, तब ही भागवतजी को टटोलना नहीं। रोज भगवान् को श्रीमद्भागवत का श्रवण करवाना और किसलिये करवाना? भगवान् को प्रसन्न करने के लिये; क्योंकि भगवान् प्रसन्न रहते हैं केवल श्रीमद्भागवत के श्रवण से। इसलिये कहा गया है कि एकाध अध्याय नहीं तो एकाध श्लोक ही सही और इतना भी नहीं हो सके; तो एक श्लोक का एक चरण ही रोज घर में पढ़ा जाय। श्रीमद्भागवत के अन्तर्गत आनेवाली स्तुति में से एक स्तुति ही याद कर ली जाय और रोज भगवान् को सुना दी जाय।

जरा कल्पना कीजिये- धर्मशाला में कुछ दिन रुका हुआ व्यक्ति, यदि अपने घर को ही भूल जाय, तो आप लोग कहेंगे, 'कैसा पागल है।' कहेंगे न? तीन-चार दिन धर्मशाला में रहा, होटल में रहा। घर को ही भुला दिया। संसार भी तो एक धर्मशाला है, यहाँ पर कौन स्थिर रहा है? आने वाला आया, कुछ दिन रहा और यहाँ से विदा हुआ।

कथा भागवतस्यापि नित्यं
भवति यद्गृहे।
तद्गृहं तीर्थरूपं हि
वसतां पापनाशनम्।।

वह घर ही तीर्थ हो जाता है जहाँ भागवतजी का पाठ होता है। तीर्थ में आना अच्छी बात है, तीर्थ में निवास करना अच्छी बात है और इससे भी अच्छी बात तब होती है, जब यहाँ से जाने के पश्चात् हम अपने घर को भी तीर्थ बना देते हैं। जब हम घर में जाते हैं, तो घर में निवास करने वाले के पातक अपने आप नष्ट हो जाते हैं। देखो, हम कहाँ रहते हैं, हम क्या खाते हैं, हम किससे बोलते हैं, हम किसका स्पर्श करते हैं। इससे भी पापों का आदान-प्रदान होता है। ये सारी बातें व्यर्थ नहीं हैं।

पापमोचनी है श्रीमद्भागवत्ः-

भगवान् सनत्कुमारजी महाराज वर्णन करते हैं कि हमारे शरीर में पापों का निवास रहता है। हमारी आँखों में पाप है। हमारे हाथों में पाप है, हमारी जिव्हा में पाप है, हमारी इस देह में अनेक प्रकार के पाप निवास करते हैं। लेकिन ये तभी तक रह सकते हैं; जब तक हम श्रद्धा के साथ श्रीमद्भागवत जी का श्रवण नहीं करते। भागवतजी की महिमा का बखान करते-करते सनत् कुमार जी थोड़े प्रखर होकर जीव कल्याण के लिये थोड़ी कठोर वाणी का प्रयोग करते हुए कहते हैं-पूरे जन्म में एक बार भी जिस

शठ अथवा कहिये कपटी मनुष्य ने पूरा मन लगाकर भागवतजी का श्रवण नहीं किया, उसका जीवन मानो एक चाण्डाल एवं गधे के जीवन के समान है।

''**चाण्डालवच्चखरवत्**''– खर का अर्थ होता है गधा। अब पता नहीं, सनत् कुमारजी को गधा ही क्यों याद आ गया? शायद इसलिये आया कि प्रायः कथा का श्रवण न करनेवाले और परमार्थ मार्ग में अपना समय न देनेवाले लोग यही बहाना बनाते हैं। 'अरे! हमें फुरसत कहाँ है?' बेचारे गधे को भी फुरसत नहीं होती है। धोबी अथवा कुम्हार के घर से नदी तक और नदी से वापस धोबी अथवा कुम्हार के घर तक। बेचारे का आना-जाना चलता ही रहता है– हम प्रपञ्च में आये हैं, प्रपञ्च में रहना है। गृहस्थाश्रम स्वीकार किया है तो जिस प्रकार का कर्तव्य हमें निभाना चाहिए, वह तो निभाना ही पड़ेगा। लेकिन उन कामों में इतना नहीं दब जाना चाहिए कि उनके कारण हम आत्म-कल्याण ही भूल जायँ; क्योंकि यह संसार ही ऐसा है। जरा कल्पना कीजिये– धर्मशाला में कुछ दिन रुका हुआ व्यक्ति, यदि अपने घर को ही भूल जाय, तो आप लोग कहेंगे, 'कैसा पागल है।' कहेंगे न? तीन-चार दिन धर्मशाला में रहा, होटल में रहा। घर को ही भुला दिया। **संसार भी तो एक धर्मशाला है, यहाँ पर कौन स्थिर रहा है? आने वाला आया, कुछ दिन रहा और यहाँ से विदा हुआ।** अब हम धर्मशाला में तीन-चार दिन रहते हैं,७-८ दिन रहते हैं। अधिक से अधिक महीने भर रहेंगे। आखिर तो घर लौटना ही है। इसी प्रकार यह संसार कागज की पुड़िया है– ''**बूंद पड़ी घुल जाना है, रहना नहीं, देश विराना है।**'' जिनको अपने मूलस्थान का स्मरण है; वे संत सामान्य जीवों को उस स्वरूप का स्मरण दिलाते हैं। इसलिये भैया! यहाँ पर रहकर जो काम करना है, अवश्य करना चाहिए। लेकिन **काम करने का अर्थ यह नहीं होता है कि हम अपने को ही भुला दें।** हमारे स्वरूप का विस्मरण न हो। हम आखिर भगवान् के अंश हैं, इसका विस्मरण न हो जाय। संसार का काम अवश्य करना; लेकिन यह मत कहना कि संसार के सारे काम होने के पश्चात् मैं भगवान् का श्रवण करूँगा। यह संसार ऐसा विचित्र है; जितने काम आप करते रहेंगे, उतने काम लोग आपके सिर पर लादते रहेंगे। करके देखिये।

मराठवाड़ा के एक सेठजी जगन्नाथपुरी गये। (मराठवाड़ा महाराष्ट्र का एक क्षेत्र है) अब मराठवाड़ा में जन्म होने के कारण उन सज्जन ने कभी समुद्र नहीं देखा था। श्रद्धा तो बड़ी थी। जाकर सागर के तट पर स्नान हेतु अपने वस्त्रादि लेकर खड़े। देखते रहे। पण्डे लोग तो सावधान होते हैं ऐसे लोगों को सहयोग करने के लिये। एक पण्डे ने आकर कहा–क्यों सेठजी, नहाना नहीं है क्या? तो उसने कहा–'इतनी दूर से आया हूँ, सागर में स्नान करने के लिये ही।' अरे! आधा घण्टा हो गया है, आप स्नान नहीं कर रहे हैं। अरे भैया! स्नान तो करना है, पर मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि ये उठने वाली लहरें थम जायें। उसके बाद मैं स्नान करूँ। पण्डे ने कहा– ''सेठजी! फिर तो आप नहा लिये। ये सागर की लहरें उठती ही रहेंगी, ये थमनेवाली नहीं है। इनके चलते हुए आप स्नान कर लीजिये।''

इसलिये ध्यान रखना, **संसार के कामों की लहरें तो उठती ही रहेंगी। ये थमने वाली हैं नहीं।** उसी में से समय निकाल करके गंगाजी के तट पर भागवतजी की ज्ञान-गंगा में स्नान कर लीजिये। ये मौका मिलने वाला नहीं।

ब्राह्मणों के सान्निध्य में गृहप्रवेश तथा पू. गुरुदेव के करकमलों द्वारा समर्थ रामदास स्वामी की दिव्य मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुई। इसके पश्चात् भारत के कोने–कोने से पधारे कक्ष दानदाताओं द्वारा विधिवत पूजन करवाकर शास्त्रीय विधि के अनुसार अपने अपने कक्ष लोकार्पित किये गये। लोकार्पण समारोह के निश्चित समय से पूर्व ही डॉ. श्री मोहनजी भागवत का पदार्पण गाथा मंदिर प्रांगण में हुआ। आपको देखते ही परिसर में उपस्थित सभी लोग उत्साह से भर गये। आपने सर्वप्रथम गाथा मंदिर में जाकर दर्शन किया तथा 'साधक निवास' को देखकर समर्थ रामदास स्वामी की प्रतिमा का पूजन कर अत्यंत हर्षित हुए।

गौधूलि वेला के शुभ मुहूर्त पर 'समर्थ रामदास स्वामी साधक निवास लोकार्पण समारोह' का आरंभ हुआ। समस्त पांडाल में 'बोला पुंडलीक वरदे हरी विठ्ठल श्री ज्ञानदेव तुकाराम' एवं 'जय जय रघुवीर समर्थ' दोनों सम्प्रदायों के उद्घोष एक साथ गूंज रहे थे। इन उद्घोषों को सुनकर दोनों सम्प्रदायों के बीच आये भेद को मिटाने के लिए जिन जिन महापुरुषों ने प्रयास किया; उन सभी को अत्यंत हर्ष हो रहा था। कार्यक्रम के आरंभ में **हरिभक्ति परायण श्री पांडुरंग महाराज घुले** ने अपना प्रास्तविक भाषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस साधक निवास में किसी भी जाति के बालकों को प्रवेश दिया जायेगा। यहाँ आधुनिक विद्या के साथ–साथ भारतीय संस्कृति का भी विस्तृत अध्ययन करवाया जायेगा; ताकि यहाँ अध्ययन किये हुए छात्र सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति की पताका फहरा सकें। तद्नंतर प्रथम दानदाता एवं प.पू. स्वामीजी के अध्यापक एवं श्री गोपालजी वैद्य एवं भगतसिंह बनाफर जी के परिवार जिन्होंने 'नेपाल आपदा राहत कोष' के लिए ११ लाख की राशि पू. गुरुदेव को समर्पित की इनके पू. मोहन भागवत जी के द्वारा सम्मानित किया गया।

पूज्यवर ने अपनी अद्‌भुत अमोघ आशीर्वादात्मक वाणी द्वारा सभी के हृदयों को छू लिया। समर्थ रामदास स्वामी साधक निवास का लोकार्पण करते हुए कहा कि साधक निवास के निर्माण के रूप में जिन जिन भाविक भक्तों ने तन, मन, धन से सहयोग किया है; उन सबने एक दिव्य सेतु निर्माण का पुण्य अर्जित किया है। यह दिव्य सेवा संत तुकाराम महाराज की कृपा से मुझे प्राप्त हुई और मैंने उस सेवा को स्वीकार कर राष्ट्र सेवा में समर्पित किया है।

डॉ. श्री मोहनजी भागवत ने अध्यक्षीय भाषण में निवेदन किया कि भारतीय संस्कृति की रक्षा से ही सम्पूर्ण विश्व की रक्षा होगी। इसलिए भारतीय संस्कृति के रक्षार्थ ''साधक–निवास'' के निर्माणार्थ जिन–जिन लोगों ने सहयोग किया है उन सबका हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। आपने कहा कि मुझे पू. स्वामीजी ने तुकाराम महाराज के चरणों तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया। अतः उनको धन्यवाद। कार्यक्रम के अंत में हरि भक्ति परायण बंडा तात्या कराडकर महाराज ने आभार प्रदर्शन किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. प्रकाशजी सोमण ने किया।

इसके पश्चात् ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा रचित विश्वशांती 'पसायदान (प्रसाद दान)' का पठन कर कार्यक्रम का समापन हुआ। समापन के पश्चात् उपस्थित सभी सज्जनों के लिए महाप्रसाद की व्यवस्था की गई।

इस प्रकार जनता जनार्दन के सहयोग से अत्यंत कम समय में 'समर्थ रामदास स्वामी साधक निवास' का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ। यह 'साधक निवास' आनेवाली पिढीयोंको वारकरी एवं समर्थ संप्रदाय के बीच एकता का स?देश देता रहेगा।

पं. अशोक पारीक, पुणे

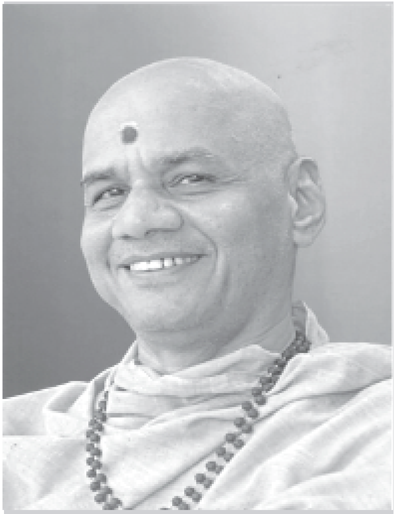

गुरु महिमा

ऐसी धारणा है कि गुरुपूर्णिमा से देवऊठनी एकादशी तक के चार मास; जिन्हे हम चातुर्मास कहते हैं, सम्पूर्ण सृष्टि गुरु के ज्ञान के प्रकाश से ही आलोकित होती है।

गुरु के महत्त्व को दर्शाने हेतु पुराणों में एक सुंदर प्रसंग है। महर्षि वसिष्ठ को ब्रह्माजी ने यह कहते हुए सूर्यवंश का पुरोहित बनाया कि इस कुल में भगवान् का अवतरण होगा। इस कुल में राजा भगीरथ के पुत्र असमंजस, उनके पुत्र अंशुमान और उनके पुत्र दिलीप का जब विवाह हो रहा था; तो सातवें फेरे में राजा दिलीप ने गुरुदेव वसिष्ठ से कहा कि एक काली आकृति उन्हें सामने दिखाई पड़ रही है। योगबल से वसिष्ठ जी ने जान लिया कि वह काल है। उन्होंने फेर रुकवा दिया और मृत्यु को स्तम्भित कर, ब्रह्मलोक पहुँचे। उन्होंने ब्रह्माजी से पूछा, ''आपने तो कहा था कि इस कुल में भगवान् आएँगे, पर जब राजा दिलीप ही नहीं होंगे तो वंश कैसे बढ़ेगा?'' ब्रह्मा ने कहा कि ऋषिवर यह चूक तो हो गई; क्योंकि राजा दिलीप की मृत्यु सातवें फेरे में ही लिख दी गई है। इस समस्या के समाधान के लिए भगवान् विष्णु एवं भगवान् शिव भी आए। सभी विचार करने लगे कि इस विधि के लेख को कैसे मिटाएँ? तब भगवान् भोले भंडारी ने गुरु की महिमा का बखान करते हुए कहा कि यह कार्य तो वसिष्ठ ही कर सकते हैं और भगवान् की मंशानुसार उन्होंने राजा दिलीप की मृत्यु को टाल दिया अर्थात गुरु कृपा से विधि का विधान भी बदल गया। तभी से यह श्लोक प्रकाशित है–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

पुराण की इस कथा के सार में मूलतः गुरु की महिमा का प्रतिपादन ही है। परमेश्वर ने भी इस सृष्टि में वेदज्ञान, आत्मज्ञान को प्रकाशित करने के लिए वेदव्यास के रूप में अवतरण लिया। इस तिथि को ही विश्व गुरुपूर्णिमा के रूप में जानता है। ऐसी धारणा है कि गुरुपूर्णिमा से देवऊठनी एकादशी तक के चार मास; जिन्हें हम चातुर्मास कहते हैं, सम्पूर्ण सृष्टि गुरु के ज्ञान के प्रकाश से ही आलोकित होती है। प्रत्येक सजग, चिंतनशील प्राणी को इन दिनों स्वाध्याय और अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए विशेष समय देना चाहिए; ताकि वह मानव जीवन के महत्त्व और उसके सार्थक उपयोग को समझ सके और जीने की कला तथा सृजन के रहस्यों को आत्मसात् कर सके।

– प्रो. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी

पूज्य स्वामीजी एवं सभी न्यासीगणों के द्वारा किया गया। सायंकाल ८ बजे से विद्यापीठ के पूर्व छात्र भागवत कथाकार श्री. मनीष भाई ओझा–जोधपुर ने भजन संध्या प्रस्तुत की।

महोत्सव के अंतिम दिन के मुख्य यजमान विद्यापीठ के उपाध्यक्ष श्रीमान जोधराज जी लढ्ढा थे। इस दिन रुद्राभिषेक एवं रुद्रमहायज्ञ की पूर्णाहुति तथा प्रवचन के पश्चात् स्वामीजी द्वारा विद्यापीठ के विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम–द्वितीय स्थान प्राप्त २१ छात्रों को प्रमाणपत्र सहित उपहार सामग्रियाँ प्रदान करके सम्मानित किया गया। इसी समय महोत्सव की सकुशल सर्वांग सफलता में सर्वाधिक परिश्रम करने वाले विद्यापीठ के सभी आचार्यों का सम्मान विद्यापीठ के पदाधिकारी–श्री. आनंदजी राठी, श्री. राम अवतारजी

जाजू, श्री. संदीपजी झँवर, श्री. अशोकजी कालानी, श्री. अरुणजी अग्रवाल आदि न्यासी गणों द्वारा किया गया। रात्रि ८ से १० बजे तक गिरिराज मित्र मंडल, कोटा द्वारा भजन संध्या प्रस्तुत की गयी, तदुपरान्त रात्रि ११ बजे से परम पूज्य गुरुजी द्वारा शिवरात्रि उत्सव के निमित्त भगवान् मृत्युञ्जय महादेव का षोडषोपचार पूजन विधि–विधान से करने के बाद दुग्ध मिश्रित सहस्र धाराओं द्वारा रुद्राभिषेक किया गया, जिसमें देश–विदेश से आये हुए अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

– डॉ. ब्रज बिहारी पांडेय

सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय एवं ज्ञानेश्वर कन्या वात्सल्य धाम, आलंदी का वार्षिक उत्सव संपन्न।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा संचालित भगवान् श्री ज्ञानेश्वर महाराज की छत्र छाया में चल रहे ''प्रतिष्ठान'' के प्रथम वेदविद्यालय सद्गुरु निजानंद महाराज वेदविद्यालय को २६ वर्ष पूर्ण हुए।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वेदविद्यालय एवं ज्ञानेश्वर गुरुकुल द्वारा संचालित ज्ञानेश्वरकन्या वात्सल्य धाम के १३ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में दोनों संस्थाओं का संयुक्त वार्षिक उत्सव दि. ११ से १३ मार्च २०१६ को संपन्न हुआ।

वरिष्ठ संत हरिभक्ति परायण श्री यशवंतमामा जुने महाराज के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ।

दि. ११ मार्च को विद्यालय के अध्यापकों एवं वैदिक बटुकों द्वारा महारुद्र याग किया गया। रात्रि में हरिभक्ति परायण श्री आबा साहेब गोडसे जी महाराज द्वारा वारकरी सम्प्रदाय की पद्धति से कीर्तन संपन्न हुआ। दि. ११ एवं १२ मार्च को प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वक्तृत्व, निबंध, गायन, लेखन, नाट्य, सूर्यनमस्कार, शिवमहिम्न स्तोत्र कंठस्थीकरण आदि विविध स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। हर स्पर्धा में कनिष्ठ एवं वरिष्ठ दो गुट बनाये गये।

सूर्यनमस्कार स्पर्धा के कनिष्ठ गुट में महेश उपासनी ने १२४ सूर्यनमस्कार निकालकर प्रथम एवं सुबोध अयाचित १२० सूर्यनमस्कार निकालकर द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया। वरिष्ठ गुट में महेश जोशी ने १३० सूर्यनमस्कार निकालकर प्रथम एवं विशाल जोशी ने १२६ सूर्यनमस्कार निकालकर द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया। **वक्तृत्व स्पर्धा** के कनिष्ठ गुट में प्रमोद पटवारी ने स्वामी विवेकानंद विषय पर व्याख्यान देकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। अभय जोशी ने 'माझ्या लक्षात राहिलेली सहल' विषय पर भाषण देकर

दूसरा क्रमांक प्राप्त किया। विशाल जोशी ने 'स्वामी विवेकानंद' विषय पर बोलकर तृतीय क्रमांक प्राप्त किया। वरिष्ठ गुट में वैभव सोनवने ने प्रथम क्रमांक एवं महेश जोशी ने द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया। **गायन स्पर्धा** में महेश उपासनी प्रथम एवं ऋषिकेश व्यास ने द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया। **वेशभूषा स्पर्धा** में आशुतोष ने नरेंद्र मोदी बनकर प्रथम क्रमांक एवं धीरज ने सावतामाली बनकर द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया। शिवमहिम्न स्तोत्र कंठस्थिकरण स्पर्धा में कनिष्ठ गुट में महेश प्रथम एवं सुबोध ने द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया। वरिष्ठ गुट में प्रशांत पुराणिक प्रथम एवं किशोर रामदासी ने द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया। निबंध लेखन स्पर्धा के कनिष्ठ गुट में विशाल जोशी प्रथम, आदित्य जोशी द्वितीय एवं अथर्व ने तीसरा क्रमांक प्राप्त किया। वरिष्ठ गुट में महेश जोशी प्रथम, वैभव ने द्वितीय एवं आशुतोष ने तृतीय क्रमांक प्राप्त किया। नाट्य स्पर्धा में अथर्व एवं सहयोगियों ने प्रथम, विशाल एवं सहयोगियों ने द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया। प्रमोद पटवारी को विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया।

दि. १३ मार्च को हरिभक्ति परायण श्री मारुती महाराज कुरेकर जी की अध्यक्षता में, ह.भ.प.श्री मानिक शास्त्री मुखेकरजी महाराज, ह.भ.प.श्री उल्हास महाराज सूर्यवंशी, माननीय श्री वीरेंद्रजी जाधव की प्रमुख उपस्थिति में एवं पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज की आशीर्वादात्मक उपस्थिति में कार्यक्रम आरंभ हुआ। कार्यक्रम के आरंभ में देवपूजन एवं दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् ५१ वारकरी साधकों का पूजन कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात विविध स्पर्धाओं में विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी संतो ने आशीर्वाद प्रदान कर सभी को कृतार्थ किया। पसायदान एवं महाप्रसाद के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

– वेदमूर्ति मुकेश दंडवते

पृष्ठ १२ का शेष *(जीवन एक चुनौती है ....)*

तक मैं स्वयं नही पढूँगा, मेरे समाज का उत्थान नहीं होगा। किसी भी तरह मुझे ज्ञान का अर्जन करना चाहिए। रात-दिन वे ज्ञान का अर्जन करते रहे। जबतक आप लोग पढ़ रहे हैं तब तक आपको रात-दिन ग्रंथों में डूबना होगा।

My never failing friends are they with whom I converse day by day. जब एक व्यक्ति किसी पुस्तक को खोलता है, तब जिसने अपना सारा जीवन उस ग्रंथ को लिखने के लिए लगाया; उसके जीवनभर के ज्ञान को यह बैठा-बैठा दो चार घंटों में प्राप्त कर सकता है। अगर इन ग्रंथों के साथ हमने मित्रता नहीं की, तो हमारे महान् बनने का सपना शेखचिल्ली की तरह रह जायेगा। हम कुछ नहीं बन पाएंगे। जीवन बनाने के लिए इन ग्रंथों को अध्यवसायपूर्वक पढ़ना पड़ेगा।

एक वाक्य मैंने और सुना था- burn your books जिस संदर्भ में भंडारीजी ने यह वाक्य कहा; उस संदर्भ में वह ठीक है। तब वही अवस्था आनी चाहिए। इसका मैं दूसरा अर्थ करता हूँ। मैं जिन-जिन अध्यापकों के पास पढ़ा हूँ, उन्होंने कभी भी पढ़ाते समय पुस्तक को अपने सामने नहीं रखा। उनका ज्ञान पुस्तकों में नहीं रहा था, वह ज्ञान उनके मस्तक में आ गया था। वे पुस्तकें उनके लिए व्यर्थ थीं।

इस अर्थ में burn your books याने keep them aside हमारे जीवन में भी ऐसा समय ज्ञान की आराधना करते समय आना चाहिए।

सभी को लगता है- रात में पुस्तक मेरे सिरहाने रखकर सोऊँ। अपने आप वह ज्ञान पुस्तक से मेरे मस्तक में आ जाए तो कितना बढ़िया होगा। मैं पुस्तक पढ़ने का प्रयास करता हूँ तो उस पुस्तक में मेरा मन नहीं लगता। पुस्तक तो सामने होती है, लेकिन उसके पन्नों पर कुछ और ही दिखाई देता है। चित्त एकाग्र होता नहीं। इसलिए मित्रो, इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए- पुस्तकों के ऊपर से अपनी दृष्टि घुमाते रहने से सबकुछ प्राप्त नहीं हो जाएगा। चित्त एकाग्र करना पड़ेगा। जिस एक कला ने संसार में महानता और छोटेपन में अंतर का निर्माण कर दिया वह कला है- **एकाग्रता।** जिसने एकाग्र होकर किसी काम को करना सीख लिया, वह अपने सारे साथियों से आगे निकल जाता है। एकाग्र व्यक्ति हमेशा आगे जाता है। Get focussed आप लोगों का कार्य तो पढ़ना और श्रवण करना होता है। यह कला आप को सीखनी चाहिए।

(शेष अगले अंक में)

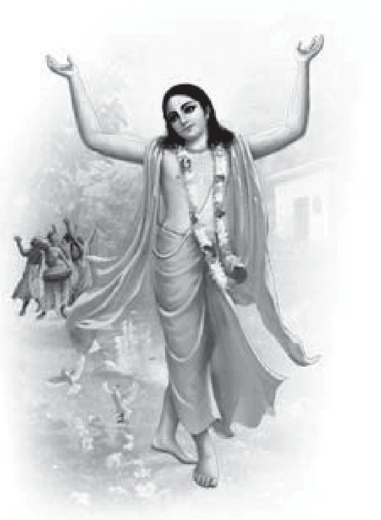

त्राहि माम् शरणागतम्

> भगवान् सदाशिव ने जगन्माता पार्वती को बताया कि शिव के कुपित हो जाने पर भी गुरु शिष्य की रक्षा करने की सामर्थ्य रखता है; किन्तु यदि गुरु उस पर क्रोध करे तो महारुद्र शिव भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते।

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को व्यास-पूजा की भारतीय परम्परा है तथा इस दिन को गुरु पूर्णिमा एवं अनुशासन पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। गुरु-शिष्य का संबंध इतना पवित्र है; जितना भगवान् तथा भक्त का। भारतीय संस्कृति में श्री गुरु को ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश का महत्त्वपूर्ण 'रोल' अदा करने के कारण अति विशिष्ट स्थान एवं सम्मान दिया जाता है।

गुरु की गरिमा को दरशाने के लिए 'गुरु-गीता' का चवाँलीसवाँ श्लोक अति महत्त्वपूर्ण है; जिसमें भगवान् सदाशिव ने जगन्माता पार्वती को बताया कि शिव के कुपित हो जाने पर भी गुरु शिष्य की रक्षा करने की सामर्थ्य रखता है; किन्तु यदि गुरु उस पर क्रोध करे तो महारुद्र शिव भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। आगे भगवान् भोलेनाथ माँ भवानी से कहते हैं कि सब प्रकार के प्रयत्नों से श्री गुरु की शरण में ही जाना चाहिए। उपरोक्त श्लोक दृष्टव्य है –

शिवे क्रुद्धे गुरुस्त्राता, गुरौ क्रुद्धे शिवो न हि।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन, श्री गुरुं शरणं व्रजेत ।।४४।।

वैसे तो, जो भी व्यक्ति हमें ज्ञान देता है, समझाता-सिखाता है, गुरु ही माना जाता है; किन्तु वास्तविक गुरु तो वो सत्ता एवं शक्ति है; जो साधना-समर के सारे दाव-पेंच शिष्य को समझाते हुए आत्म-बोध करा कर परमात्मा से योग का मार्ग प्रशस्त करता है।

गुरु-पूर्णिमा के पावन-पर्व पर अपने गुरु के प्रति श्रद्धा का भाव प्रकट करते हुए उनकी शिक्षाओं को जीवन में उतारने के संकल्प का नवीनीकरण करना ही इस पर्व का मुख्य प्रयोजन है। साल भर जिस-तिस प्रकार से साधना-शकट खिंचता रहता है; कई त्रुटियाँ भी हो जाती हैं और कमियाँ भी रह जाती हैं। अतएव आत्म-निरीक्षण एवं आत्म-विश्लेषण द्वारा उनमें परिमार्जन करने का संकल्प लिया जाता है। संकल्प के पश्चात् ही वांछित शक्ति मिलती है; जिसके द्वारा बोध की प्रक्रिया में तत्परता पूर्वक संलग्न हुआ जा सकता है।

सामान्य पूजा के कर्मकाण्ड के साथ-साथ श्री गुरु के साथ भावनात्मक लगाव का होना भी परमावश्यक है; अन्यथा अपेक्षित ऊर्जा का संचार हमारे भीतर नहीं हो पायेगा। स्वयं को पूरी आस्था एवं श्रद्धा के साथ उन्हें समर्पित कर देना ही 'शरणागति' है और शरणागत की रक्षा करना गुरु का दायित्व है। इस पर्व की सार्थकता तभी है; जब हम अपने हृदय की गहराइयों से श्रद्धा पूर्वक गुरु के प्रति समर्पित होकर उनके कार्यों में सहयोग करते हुए उनके सपनों को साकार करने का भरसक प्रयास करते रहें।

– सत्यनारायण सरोज

देश के कोने कोने में छाया गीता परिवार

मुंबई

गीता परिवार एवं भारत विकास परिषद के तत्त्वावधान में केशव सृष्टी, उत्तन मुंबई के सुरम्य स्थान पर संचालित रामरत्ना विद्यालय के पावन प्रांगण में दि. ४ से ८ मई २०१६ तक निवासी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मुंबई शहर के विविध क्षेत्रों से आये ११५ बालक बालिकाओं ने भाग लिया। इस शिविर में गीता परिवार के विविध उपक्रमों के साथ-साथ ब्रह्मविद्या तथा भारत विकास परिषद के विशेष उपक्रमों का भी प्रशिक्षण दिया। गीता परिवार की ओर से श्री अशोक भैय्या, श्री दत्ताजी भांदुर्गे, आशुतोष एवं प्रवीण ने प्रशिक्षण दिया। इस शिविर को संपन्न कराने में श्रीमती कृष्णा उपाध्याय, श्रीमती हेतल दीदी, एवं गीता परिवार मुंबई के शाखाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय गीता परिवार के कोषाध्यक्ष श्री. महेन्द्रजी काबरा (भाईजी) का विशेष योगदान रहा। शिविर के अंतिम दिन श्री आनंदजी राठी ने अभिभावकों एवं शिविरार्थियों को जीवनोपयोगी बातें बतलाकर सभी को सुंदर मार्गदर्शन किया।

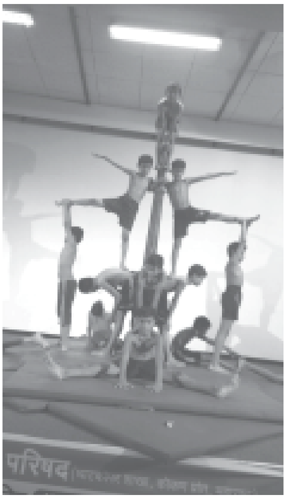

हैदराबाद

गीता परिवार, हैदराबाद द्वारा दि. ९ से १५ मई तक निवासी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें २०० से अधिक बालक-बालिकाओं ने २५ से अधिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। यह शिविर स्वामी नारायण गुरुकुल के पवित्र प्रांगण में संपन्न हुआ। शिविरकी संपन्नता में श्री. अरुणजी गौड, श्री. हरिनारायणजी व्यास एवं गीता परिवार, हैदराबाद एवं संगमनेर की टीम का विशेष योगदान रहा।

लखनऊ

गीता परिवार, लखनऊ शाखा द्वारा लखनऊ शहर एवं ग्रामीण विभाग में लगभग ११५ बाल संस्कार वर्ग संपन्न हुए एवं एक निवासी कार्यकर्ता शिविर भी संपन्न हुआ। गीता परिवार लखनऊ का कार्य वास्तव में गीता परिवार की सभी शाखाओं को मानो एक नव चेतना प्रदान करता है इस प्रकार का दिव्य कार्य डॉ. आशु गोयल के मार्गदर्शन में उनके सहयोगी कार्यकर्ताओं के उत्साह से चल रहा है।

सज्जनगड

गीता परिवार, पुणे द्वारा गत पांच वर्षों से निवासी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष ग्रीष्मकालीन अवकाश में संत श्री समर्थ रामदास स्वामी की पवित्र स्थली सज्जनगड महाराष्ट्र में दि. १५ से १८ मई तक आयोजित किया गया। इस शिविर में पुणे शहर के विभिन्न स्थलों से १०० सौभाग्यशाली बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। ४ दिवसीय इस शिविर में बच्चों ने बडे उत्साह के साथ भाग लिया एवं समर्थ रामदास स्वामी के श्री चरणों में बैठकर जीवन जीने कि कला का प्रशिक्षण लिया। यह शिविर सौ. संतोषी मुंदडा के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। सौ. संगीता मणियार ने योग सोपान एवं प्रज्ञासंवर्धन का प्रशिक्षण दिया, सौ. विद्या मंत्री एवं सौ. वृंदा देशपांडे

ने गीतगान, वैज्ञानिक खेल सिखाये, सौ. मृणाल विप्रदास ने प्रथमोपचार कि जानकारी दी तथा वेदिका कुलकर्णी

ने कहानी सुनाई एवं अशोक भैय्या ने गीता, गीतगान एवं बाल हनुमान कथा सुनाई। सज्जनगड कि संपूर्ण जानकारी वहाँ के संतों ने दी। श्री. अनंत शास्त्रीजी ने बच्चों को संबोधित किया। रामदास स्वामी संस्थान, सज्जनगड ने गीता परिवार को बहुत ही सुंदर सहयोग किया। अत: गीता परिवार संस्थान का सदैव ऋणी रहेगा।

कोटा

आलोच्य वर्ष में तीन संस्कार शिविरों का आयोजन हुआ; जिसमे ६५५ बच्चों ने भाग लिया। शिविर की विशेषता रही 'टॉक शो'। इसके अन्तर्गत बच्चों को वाक् कला (effective public speaking), paratrooping व rifle shooting का भी प्रशिक्षण दिया गया।

बाल भवन संस्कार वाटिका:–

यह संस्कार कार्य गत ३ वर्षो से सतत् प्रगति पर है। यहाँ ४ से ९ वर्ष की आयु के बच्चों का २ घंटे का दैनिक वर्ग चलता है। बच्चों को गाय का गुल्लक दिया गया है; जिसके माध्यम से परिवारों से नित्य गोसेवा कराई जाती है। १२ महीने में एक बार बच्चों को गौशाला भ्रमण भी कराया जाता है जिसमे बच्चे घर से २ रोटी और थोड़ा गुड़ भी लेकर आते हैं और अपने नन्हे नन्हे हाथो से बड़े ही प्यार से गायों को खिलाते है। इस समय उनकी खुशी दर्शनीय होती है। बच्चों को सब्जी मंडी भ्रमण भी करवाया गया; जहाँ उन्होंने स्वयं सब्जी भी खरीदी। अपने हाथों से खरीदी सब्जी बच्चे बड़े खुश होकर खाते हैं। होली उत्सव भी बच्चों ने बड़े ही धूमधाम से अपने सखा श्री कृष्ण के साथ मनाया और उनके संग रंग बिरंगे फूलो व गुलाब जल मिश्रित पानी से होली खेली।

पूज्य गुरुदेव की इस वर्ष कोटा नगर में आयोजित रामकथा में बच्चों ने सद्गुणों की साधना गीत पर विविध महापुरुषों की वेशभूषा धारण कर मनमोहक प्रस्तुति दी, जिसे श्रोताओं ने मुक्त कंठ से सराहा। साथ ही नए और पुराने बच्चों का सम्मेलन (baal alumni) का भी आयोजन इस वर्ष किया गया, जिसमे कोटा नगर के महापौर भी पधारे। दादा–दादी, नाना–नानी, माता–पिता के संग बाल मिलन का पूरा आनंद सभी ने लिया। इस कार्यक्रम में सभी वर्गों के लिए खेल–कूद रखे गये थे। यह अनूठा

संगम पहली बार ही आयोजित हुआ; जिसमें ४ से १० आयु वर्ग के ८५ बच्चों ने अपने परिवार के साथ भाग लिया। त्रिदशक पूर्ति वर्ष के अंतर्गत योग सोपान व प्रज्ञा संवर्धन का कार्य भी नगर के विद्यालयों में निरंतर चल रहा है। अब तक ७ पाठशालाओं में यह कार्य संपन्न हो चुका है; जिसमें २४३० बच्चे लाभान्वित हुए हैं। गीता पठन एवं कंठस्थीकरण का कार्य भी निरंतर चल रहा है। महिलाओं के लिए भी प्रज्ञा संवर्धन की कार्यशाला रखी गयी जिसमें ३५ महिलाओं ने भाग लिया। आगामी जून माह में २ शिविर प्रस्तावित हैं। परम पूज्य गुरुदेव

के आशीर्वाद और संजय भैया के कुशल निर्देशन में त्रिर्देशन में त्रिदशक पूर्ति वर्ष के अंतर्गत पूरे भारतवर्ष में गीता परिवार का कार्य बहुत ही उत्साह से चल रहा है; जिसके लिए सभी कार्यकर्ताओं का हार्दिक अभिनन्दन।

संगमनेर

गीता परिवार, संगमनेर द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश में दि. १५ अप्रैल से ३० अप्रैल तक ३५ बाल संस्कार केंद्रों का संचालन राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजयजी मालपाणी के मार्गदर्शन में संपन्न हुए। संगमनेर एवं आसपास के ग्रामीण विभाग में योगसोपान उपक्रम का कार्य बडे ही जोर-शोर से चल रहा है।

नामलगांव (बीड)

श्री गणेश समन्वय आश्रम द्वारा दि. २४ से २७ मार्च २०१६ तक निवासी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। आश्रम के बालकों में शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का भी सिंचन हो इसी उद्देश्य से प्रतिवर्ष निवासी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष १०६ बालकों ने शिविर में भाग लिया। प्रात: ६ बजे से रात्री १० बजे तक विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बालकों ने नाट्य संस्कार उपक्रम में अति उत्साह के साथ भाग लिया। इस शिविर में प्रज्ञा संवर्धन योग सोपान श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी एवं संगीताजी मणियार (पुणे) ने सिखाया। श्री. अशोक भैय्या ने गीता, गीतगान बाल हनुमान कथा एवं अन्य जीवनोपयोगी बातें बतलाकर सभी को हर्षित किया। शिविर को सुंदर ढंग से संपूर्ण करवाने में श्री. आर. बी. राठी काकाजी एवं आश्रम समूह के सभी कार्यकर्ताओं के साथ श्री माधव कालकुटे सर (अप्पा) का विशेष योगदान रहा।

जालना

ज्ञानेश्वरी माउली बाल संस्कार केन्द्र गीता परिवार द्वारा दि. १५ अप्रैल से २० अप्रेल २०१६ तक प्रतिदिन २.३० बजे से शाम ६.०० बजे तक वासंतिक शिविर का आयोजन प.पू. स्वामी गोविंद देव गिरिजी महाराज के आशीर्वाद एवं संगमनेर कार्यालय के सहयोग से जालना केन्द्र प्रमुख एडवोकेट सौ. अर्चना तोतला द्वारा आयोजित किया गया।

शिविर में बालकों के दो वर्ग बनाए गये; जिनमें प्रथम १ से ४ कक्षा तक के बालकों का था; जबकि

दूसरा वर्ग ५ वीं से ८ वीं कक्षा के बालकों का था। शिविर में हिन्दू संस्कृति के बारे में समझाया गया तथा गीता के १२वें आध्याय के वाचन का अभ्यास करवाया गया। जिसे बालकों ने अत्यधिक उत्साह से सीखा।

शिविर में बालकों को भोजन के नियमों की भरपूर जानकारी दी गई तथा बाजार के जंक-फूड से परहेज करने हेतु कहा गया। योगासन के अन्तर्गत रोज सूर्य नमस्कार सिखाया गया।

इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा विजयी बालकों को पुरस्कृत किया गया।

शिविर का आयोजन व्हील क्लब ऑफ जालना के सहयोग से सम्पन्न हुआ तथा इसे सफल बनाने में सौ.वर्षा मेहता, सौ. हेमा मेहता के साथ ही सौ. साधना मंत्री एवं सौ. कविता लोया एवं सौ. जयश्री शर्मा का परिश्रम प्रशंसनीय रहा।

ढालेगांव

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा संचालित महात्माजी वेदविद्यालय, ढालेगांव में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दि. १२ से १८ अप्रैल २०१६ तक निवासी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया

गया। प्रतिदिन प्रात: ५ बजे से रात्री १० बजे तक गीता परिवार के संस्कार प्रद विविध उपक्रमों का वैदिक बटुकों ने बहुत ही लाभ उठाया। गीता परिवार जयसिंगपुर से आई श्रीमति प्रमिला माहेश्वरी ने प्रज्ञा संवर्धन, योग सोपान, प्रात्यक्षिक प्रबोधन इत्यादी उपक्रमों का प्रशिक्षण दिया। पुणे से पधारे श्री अशोक भैय्या ने विविध कथाओं के माध्यम से संस्कारों का सिंचन किया एवं मैदानी खेल खिलाये एवं सुंदर सुंदर गीत सीखाये। इस शिविर को संपन्न करवाने में महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के पूर्व न्यासी श्री द्वारकादासजी लड्ढा एवं वर्तमान न्यासी श्री जयप्रकाशजी बिहाणीजी का विशेष योगदान रहा। इस शिविर के सर्वाधिकारी श्रीमान महेशजी ध्रुव को बनाया। तथा श्री वेदविद्यालय के व्यवस्थापक श्री. कमलाकरजी पाठक ने भी विशेष सहयोग किया।

पुणे

गीता परिवार पुणे की ओर से दि. ८ अप्रैल से ३० अप्रैल तक शहर के विभिन्न प्रभागों में कुल २५ बाल संस्कार केन्द्रों का संचालन हुआ। जिसमें लगभग ५०० बच्चे सहभागी हुए। कराटे का प्रशिक्षण श्री. यशवंत धवन सरने दिया। इन सभी शिविरों को संपन्न करवाने में श्री सत्यनारायणजी मुंदडा एवं संतोषी मुंदडा, श्री. शाम मणियार, संगीता मणियार, विद्या मंत्री, अंजली तापडिया, सूर्यकांता मानुधने, वेदिका कुलकर्णी, तृप्ती खण्डेलवाल, वृंदा देशपांडे, आदि कार्यकर्ताओं ने विशेष सहयोग किया।

चिंचवड

चिंचवड गीता परिवार द्वारा लक्ष्मणजी जोशी

व सविता जोशी के मार्गदर्शन में ग्रीष्मकालीन अवकाश में २ शिविरों आयोजन किया गया। जिसमें १०० बच्चे लाभान्वित हुए। इस शिविर में श्री अशोक भैय्या एवं अंजली तापडिया का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। विविध स्पर्धाओं का भी आयोजन किया गया जिसमें बच्चों के उत्साह बढाने हेतु पुरस्कार वितरण किया।

सोलापुर

गीता परिवार, सोलापुर द्वारा पूरे साल १० स्कूलों में प्रति सप्ताह दो दिन नियमित रूप से वर्ग संचालित किये जाते हैं।

ग्रीष्मकालीन छुट्टीयो में इस वर्ष पंद्रह से तीस अप्रैल के मध्य सात, दस व पंद्रह दिनों के सात संस्कार सृजन केंद्र आयोजित हुए।

इसमें से चार केंद्र शहर के चारों कोनों में स्थित कामगार बस्तीयों में चलाए जाते हैं; जहाँ बालक पहले दिन अत्यंत अस्वस्थ, संकुँचाए, चंचलता से भरपूर रहते है, स्वयं को असुरक्षित समझते है... वहीं अंतिम दिन तक प्रेम, विश्वास व आदर पाकर घुलमिलकर आनंद से सतेज हो जाते है। प्रतिवर्ष केंद्रों को महान व्यक्तियों (संत, क्रांतिकारी देशभक्त, वीर बालक, कर्तृत्ववान स्त्रीपुरुष आदि) अथवा देवता या पवित्र तीर्थस्थल/

पर्वत/ नदियों आदि के नाम दिए जाते हैं..। इस वर्ष प्राचीन ऋषिओं के नाम (वाल्मीकि, विश्वामित्र, वसिष्ठ, सांदिपनी, अरुंधति, अनसूइया) केंद्र परिचय के लिए निर्धारित रहे..।

ज्ञातव्य हैं कि शहर में चव्वालीस पैंतालीस के मध्य तापमान रहने पर भी सभी केंद्र सुचारू रूप से संचालित हुए..। कुल साढ़े नौसो गोपालकृष्ण व देवि भगवतिस्वरूप बालकों की संस्कारसिंचनरूपी सेवा पूजा करने का अवसर प्राप्त हुआ..। शिविर को सफल बनाने में विद्याताई मणूरे, मनिषाताई पाटील, अनुताई होनमाने, गार्गीताई काव्ठे, सरलाभाभी, सुप्रिया, प्राजक्ता, हेरंब आदि प्रशिक्षक कार्यकर्ताओं ने इसमें प्रमुख सहयोग दिया।

गीता परिवार के तीस वर्षपूर्तिपर सोलापुर जिले में कुल तीस केंद्रों की योजना कार्यान्वित है।

औरंगाबाद

गीता परिवार औरंगाबाद की ओर से ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान दि. ११ अप्रैल से ११ मई के अंतराल में शहर के विविध स्थानों पर १० बाल संस्कार वर्गों का आयोजन हुआ। इन वर्गों में 'संस्कार सुगंध' पुस्तिका के आधार पर वर्ग चलाये गये। औरंगाबाद गीता परिवार के वर्गों की विशेषता यह रही कि वर्ग के समापन पर बच्चों ने महाराष्ट्र की प्रसिद्ध पंढरपुर की वारी का बहुत सुंदर दर्शन करवाया तथा रामायण के आदर्श पात्रों की कृतीयाँ करके सबको मोहित कर दिया। इन सभी वर्गों को सुंदर रीती से संपन्न करवाने में श्री. सतीशजी साबु एवं रमा भाभी साबु के मार्गदर्शन में स्मिता मुंदडा, बबीता करवा, मंगल राठी, प्रीति लाहोटी, शोभा मालानी, सविता राठी, रूपाली सोमय्या, उषा धूत, सुरेखा लड्डा, मधुबाला केला, सुरज होलानी, विजया काबरा, माया साबु, विजया खटोड, आराधना मुंदडा एवं आरती अग्रवाल का विशेष योगदान रहा। इन वर्गों में ४०० बालक एवं ५० कार्यकर्ता लाभान्वित हुए।

जिंतुर

गीता परिवार जिंतुर की ओर ग्रीष्मकालीन अवकाश में एक बाल संस्कार वर्ग का आयोजन दि. १० से १८ अप्रैल के अंतराल में किया गया जिसमें १५० बच्चों ने भाग लिया। यहाँ शाखा प्रमुख कांताबाई साबु के मार्गदर्शन में शितल दरगड, स्वाती तोष्णीवाल, पुनम सारडा, दिपाली जेथलिया आदी ने विशेष योगदान दिया।

मानवत

गीता परिवार मानवत द्वारा प्रतिवर्ष की भांती इस वर्ष भी २१ अप्रैल से २८ अप्रैल तक बाल संस्कार

शिविर का आयोजन किया गया। जिस शिविर में ७० बच्चों ने भाग लिया। शिविर के दौरान विविध स्पर्धाओं का आयोजन कर बच्चों को पुरस्कार वितरित किया। शिविर को संपन्न कराने में डॉ. राजूजी लड्डा के मार्गदर्शन में सौ. संगीता तिवारी, अरुणा चांडक, उर्मिला काबरा, चंदा बिरला, प्रीती बिरला, माधुरी लड्डा, वृंदा लड्डा, राधिका लड्डा, राधिका बांगड आदि कार्यकार्ताओं में विशेष सहयोग रहा।

बीड

गीता परिवार, बीड की ओर से दि. १८ से २७ अप्रैल के बीच बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ८० बच्चों ने भाग लिया। गीता परिवार के विविध उपक्रमों के साथ-साथ अनेक स्पर्धाओं का भी आयोजन किया गया और विजयी बालकों को पुरस्कृत किया। इस शिविर को सफल बनाने में सौ. पुष्पा जेथलिया

के मार्गदर्शन में सौ. तारा सिकची, वर्षा कासट, हेमा बाहेती, जयश्री मालपाणी, पार्वती चितलांगे, सोनल बाहेती, शशीकला राठी का विशेष सहयोग रहा।

कोल्हापुर

गीता परिवार, कोल्हापुर एवं स्वामी समर्थ मंदिर कोल्हापुर द्वारा प.पू. स्वामीजी के सान्निध्य में आयोजित श्रीराम कथा के दौरान गीता परिवार के बालक-बालिकाओं ने रामरक्षा स्तोत्र एवं गीतगान कर सभी

श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। पू. गुरुदेव द्वारा सभी कार्यकर्ताओं को सम्मिलित किया। ग्रीष्मकालीन अवकाश में भी बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। जिस शिविर एवं उपयुक्त कार्यक्रम को सफलता की ओर ले जाने में सौ. वृषाली खोत, आशा चव्हाण, भाग्यश्री चव्हाण, रेखा शेंडबाळे, सीमा पाटील, वैशाली बोलकर आदि कार्यकर्ताओंने विशेष योगदान दिया।

इचलकरंजी

गीता परिवार, इचलकरंजी शाखा द्वारा भी ७ दिवसीय संस्कार वर्ग का आयोजन किया गया। यह शिविर राजेंद्रजी राठी एवं समुह के द्वारा संपन्न हुआ।

दिल्ली

गीता परिवार, दिल्ली द्वारा श्रीमति सरिताजी मांगलिक के मार्गदर्शन में ४ और ५ मई को दो दिवसीय कार्यकर्ता शिविर का आयोजन आदर्शनगर, दिल्ली में किया गया। इस शिविर २५ कार्यकर्ताओं ने अति उत्साह के साथ भाग लिया। और भविष्य में ५ नये बाल संस्कार केंद्र लेने का संकल्प किया। इस शिविर में श्री शेखरजी वशिष्ठ का विशेष योगदान रहा। गीता परिवार, दिल्ली द्वारा गीता जयंती उत्सव की बडे ही धूम धाम से तैय्यारीयाँ चल रही हैं।

आर्वी

गीता परिवार, आर्वी के द्वारा १५ दिवसीय बाल संस्कार केंद्र का आयोजन किया गया। जिसमें ६५ बालक-बालिकाओं ने बडे ही उत्साह के साथ भाग लिया। यह शिविर सौ. उषाजी वैद्य के संरक्षण में संपन्न हुआ।

खामगांव

विदर्भ गीता परिवार द्वारा खामगांव में भी ग्रीष्मकालीन अवकाश में पंचदिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में १०० से अधिक बच्चों ने भाग लिया। यह शिविर श्री. पांडुरंगजी धंदर एवं वारकरी मंडल के कार्यकर्ताओं की देखरेख में संपन्न हुआ।

नागपुर

गीता परिवार, नागपुर द्वारा झिंगाबाई टाकली में १ मासिक वर्ग का आयोजन किया गया। जिसमें ५० बच्चों ने भाग लिया। यह शिविर श्री. पुरुषोत्तम रामदासानी के संरक्षण में संपन्न हुआ।

रिसोड

गीता परिवार, रिसोड द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश में बाल संस्कार वर्ग का आयोजन किया गया। जिसमें ५० से अधिक बच्चों ने भाग लिया। यह शिविर सौ. विजयाजी कर्वा के संरक्षण में संपन्न हुआ।

यवतमाल

गुडी पाडवा के पावन अवसर पर गीता परिवार यवतमाल द्वारा १७०० बालक बालिकाओं का 'संस्कार महाकुंभ' का आयोजन किया गया। यह भव्य महोत्सव

सौ. प्रेमाजी राशतवार व गीता परिवार, यवतमाल के अन्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से संपन्न हुआ।

अमरावती

गीता परिवार, अमरावती द्वारा १० दिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ६५ बालक-बालिकाओंने भाग लिया। यह शिविर साईनगर शाखा प्रमुख सौ. रेखा भुतडा एवं विना पांडे के सहयोग से संपन्न हुआ। अमरावती के अंबापेठ केंद्र द्वारा भी एक शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें २५ बच्चोंने भाग लिया।

इस शिविर में उर्मिला कलंत्री, सौ. मुंदडा ताई का विशेष सहयोग रहा। अमरावती में कुल ५ शिविरों का आयोजन हुआ। जिसमें शेवंती मुंदडा, आशा रामदासानी, शोभा हरकुट का विशेष योगदान रहा।

चांदुरबाजार

गीता परिवार, चांदुरबाजार द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश में ३ विद्यालयों में १० दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें १००० बालक-बालिकायें लाभान्वित हुए। इस शिविर में गीता परिवार विदर्भ प्रमुख सौ. शोभाजी हरकुट एवं हेमाजी भट का विशेष योगदान रहा।

आसेगांव

गीता परिवार, आसेगांव द्वारा पंचदिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें १०० से अधिक बच्चे लाभान्वित हुए। यह शिविर डॉ. नैना कडु के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

परतवाडा

गीता परिवार, परतवाडा द्वारा १० दिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ५० बालक बालिकाओं ने भाग लिया। यह शिविर सौ. अलका देसाई के संरक्षण में संपन्न हुआ।

अचलपुर

गीता परिवार, अचलपुर द्वारा १० दिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ७० बच्चों ने भाग लिया। यह शिविर सौ. निर्मल उघडे एवं महेश लढके के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

जयसिंगपुर

गीता परिवार जयसिंहपुर द्वारा विगत छः वर्षों के समान ही इस वर्ष भी सप्तमी के अवसर पर जयसिंहपुर की सभी स्कूलों के चयनित २१०० छात्रों द्वारा प्रातः ८ बजे मालू हाई स्कूल के विशाल प्रांगण में सूर्य नमस्कार एवं अन्य कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न किये गये। इस अवसर पर नगर के सैंकड़ों लोगों के साथ ही नगराध्यक्ष एवं शासकीय अधिकारी उपस्थित थे।

गीता परिवार की अध्यक्षा श्रीमती प्रमिला ताई माहेश्वरी, उपाध्यक्ष अशोक जी सारड़ा, श्री सूर्यवंशी आदि के विशेष प्रयासों से कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ; जिसकी सभी ने प्रशंसा की।

इससे पूर्व गीता परिवार द्वारा विगत दिनों रंगभरन प्रतियोगिता, वेषभूषा प्रतियोगिता, सुलेखन, गीता पाठान्तर आदि कई कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न किये जा चुके हैं। जिनमें सैंकड़ों बालकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

इसके अलावा सुरत, कटक, गुलबर्गा, धुलिया, नांदेड, सातारा आदि देश के कोने कोने में गीता परिवार की शाखाओं ने संस्कारों का सिंचन कर संपूर्ण देश में गीता परिवार छा गया।

चन्द्रपुर की वह राम कथा

प.पु.गुरुदेव की रामकथा का आयोजन चन्द्रपुर में दि. ६.१.१६ से १४.१.१६ तक रहा। कथा बड़ी ही आन्नदमयी व प्रेरणाप्रद रही। परन्तु रामकथा के आयोजन की प्रेरणा हमें हमारी माँ (स्व. शकुंतला उपाध्याय) से मिली।

देह त्यागिता कीर्ती मागे उरावी।
मना सज्जना हे चि क्रिया धरावी।।

अर्थात सज्जन पुरुष अपने जीवन में ऐसे सत्कर्म करते हैं कि संसार से विदा लेने के पश्चात भी उनकी यश–गाथा पीछे रह जाती है। माँ के लिए यह उपयुक्त बैठता है। उनके सम्पूर्ण जीवन की भक्ति और गुरुदेव के प्रति नैष्ठिक श्रद्धा को शब्दों में अभिव्यक्त करना कठिन है। इसी भक्ति और प्रतीक्षा के परिणामस्वरूप वर्ष के प्रारम्भ में कथा का आयोजन हुआ। परन्तु गत वर्ष का अन्त हमें एक अविस्मरणीय व असल पीड़ा दे गया, माँ हमे छोड़ गई। जीवन के अंतिम क्षणों तक गुरुदेव की प्रतीक्षा तथा रामकथा सुनने की अभिलाषा में बीता। वे तो राम कथा का लाभ नहीं ले पाई; परन्तु कई लोगों को इस लाभ की प्राप्ति हुई।

गुरुदेव की रामकथा में सभी चन्द्रपुरवासी मंत्रमुग्ध हो गए। करीब १० हजार लोगों ने यह लाभ प्राप्त किया। नौ दिन के कार्यक्रम में पूरा पंडाल अयोध्यामय हो गया। गुरुदेव ने कई उदाहरण देकर भक्ति की पराकाष्ठा को परिभाषित किया जिसमें श्रेष्ठ शबरी, हनुमानजी, भरतजी का उल्लेख किया। आज के युग के परिप्रेक्ष्य में एक नारी के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया जिसमें माँ की भूमिका को श्रेष्ठ बताते हुए उसके महत्व को समझाया।

प्रवचन की श्रृंखला में रामायण को जीवन में कैसे उतारा जाए तथा मनुष्य को कुछ ऐसे सत्कर्म भी करने चाहिए कि जिन्हें लोग याद रखें। कथा का समापन अत्यन्र्त भावात्मक और शिक्षाप्रद रहा। वास्तव में हमारी यह यात्रा प.पू.स्वामीजी के सान्निध्य में होने के कारण अविस्मरणीय थी।

– श्री. विनोद उपाध्याय (चंद्रपुर)

पृष्ठ १७ का शेष ***(पूर्णयोग बोधिनी गीता).....***

सिखाने के लिए भगवान् कर्म के आत्यंतिक पराकाष्ठा के क्षेत्र – युद्ध के क्षेत्र में भगवद्गीता का ज्ञानोपदेश करते हैं। ये केवल ब्रह्मविद्या होती तो हिमालय की कंधरा में बैठ करके उसका उपदेश किया जाता या किसी आश्रम में किया जाता अथवा गंगाजी के तटपर कहीं किया जाता, किसी मंदिर में बैठ करके किया जाता। भगवान् ने न मंदिर चुना, न आश्रम, न हिमालय की कंधरा चुनी, न गंगा का तट। सीधे–धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे – कुरुक्षेत्र का समरांगण चुना। इसका अर्थ ही ये है कि **मनुष्य का जीवन भी एक कुरुक्षेत्र है और वह वहाँ पर संघर्ष करने के लिये बाध्य है।** संसार में ऐसा कोई जीव नहीं; जो संघर्ष करने के लिये बाध्य नहीं। मनुष्य को निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। परिस्थिति के साथ संघर्ष करना पड़ता है, लोगों के साथ संघर्ष करना पड़ता है, अपने भीतर के विकारों के साथ संघर्ष करना पड़ता है और अपनी आदतों के साथ संघर्ष करना पड़ता है। संघर्ष में तो हम सब लोग हैं। इसलिए संत तुकाराम महाराज कहते हैं, ''रात्रंदिन आम्हा युद्धाचा प्रसंग'' भैय्या, कभी किसी को एक–आध बार लड़ना पड़ा होगा उससे क्या, हमें तो दिन–रात लड़ना पड़ता है।

लड़ना पड़ता है कि नहीं? अरे दोपहर का समय होता है, सब लोग यहाँ पर आ कर गीता का पाठ करते हैं और कुछ लोग अपने कमरे में सोये रहते हैं – कभी जगते हैं तो उनको लगता है जाना चाहिए – लेकिन क्या करना? ऽऽहूंऽऽ नहीं आप सब लोग

तो, उस दिन एक विशेष बात मेरे ध्यान में आई कि भगवद्गीता को कुछ और क्रम से पढ़ना चाहिए। वस्तुतः भगवद्गीता योगशास्त्र है। संपूर्ण गीता के हर अध्याय को एक योग का नाम दे दिया। पहला अर्जुन विषाद योग है, दूसरा सांख्य योग है, तीसरा कर्मयोग है ऐसा हर अध्याय योग है और कुल मिला करके भगवद्गीता क्या है? – योगशास्त्र है।

तो आये थे। तो वहाँ पर संघर्ष हुआ कि नहीं, बोलो? यह जो पड़े रहने की अपनी आदत है, उस आदत के साथ संघर्ष हुआ कि नहीं? इस प्रकार का संघर्ष मनुष्य के जीवन में हर पल – 'रात्रंदिन आम्हा युद्धाचा प्रसंग' होता रहता है।

यह तो मैंने सामान्य उदाहरण बतलाया – आपके व्यवसाय में, आपकी नौकरी में, किसी भी काम को करने में, सर्वत्र आपको संघर्ष करना पड़ेगा। संघर्ष के किसी भी क्षण में, उपयोगी होने जैसा ज्ञान भगवान्, भगवद्गीता के माध्यम से हम लोगों को देते है।

योगशास्त्र है भगवद्गीता

योगस्थः कुरु कर्माणि
सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा
समत्वं योग उच्यते। (२.४८)

भगवान् कहते है, ''योगस्थः कुरु कर्माणि''– प्रातः काल में हम लोगों ने सुना था –

तपस्विभ्योऽधिको योगी
ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी
तस्माद्योगी भवार्जुन। (६.४६)

अर्जुन, तुम योगी हो जाओ। और योगी हो कर के क्या करो? गंगाजी के तटपर जा कर के बैठो? मौन लेकर के बैठो? किसी के साथ बात नहीं करो? बिल्कुल कह दो अब शिविर के साथ मेरा कोई संबंध नहीं है? घरवालों को कह देना कि मैं अब लौट कर आने वाला नहीं हूँ। बड़ा वैराग्य मुझे आ गया है। यहीं से हिमालय के लिए आगे बढ़ने वाला हूँ। भगवान् ऐसा योग गीता में नहीं सिखाना चाहते। भगवान् वह योग सिखाना चाहते हैं; जो आपके कर्मक्षेत्र में उपयोगी होगा। इसलिए कहते हैं – केवल योगी भव नहीं कहा ''**योगस्थः कुरु कर्माणि**'' योगी होकर के अपना कर्म करो। कर्म करते–करते योगी बनो। यह पतञ्जलि ने नहीं कहा। यह हठयोग प्रदीपिका में नहीं है। और इस प्रकार का अपना जीवन बनाने के लिए जिस प्रकार अनुशासन की एक मालिका अपने पीछे होनी चाहिए, उसका सारा उपदेश भगवद्गीता में हम लोगों को प्राप्त होता है।

तो, उस दिन एक विशेष बात मेरे ध्यान में आई कि भगवद्गीता को कुछ और क्रम से पढ़ना चाहिए। वस्तुतः भगवद्गीता योगशास्त्र है। संपूर्ण गीता के हर अध्याय को एक योग का नाम दे दिया। पहला अर्जुन विषाद योग है, दूसरा सांख्य योग है, तीसरा कर्मयोग है ऐसा हर अध्याय योग है और कुल मिला करके भगवद्गीता क्या है? – योगशास्त्र है।

अब देखिये, भगवद्गीता में जो कृष्ण का स्वरूप है वह भी तो – ''**यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः**''। (१८.७८) संजय कहते हैं – ''**यत्रयोगेश्वरःकृष्णः**'' ''**योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्**''। **मैने क्या सुना? संजय कहते हैं, ''मैंने योग सुना, अच्छा किससे सुना? 'योगं योगेश्वरात्कृष्णात्'**

''**महायोगेश्वरोहरिः**''

भगवद्गीता में स्थान स्थान पर भगवान् के योगेश्वर नाम को अधिकाधिक महत्त्व दिया गया है और भगवद्गीता को भी संपूर्ण योग कहा गया है। तो मैंने एक विषय उस दिन एक घंटे में रखा। सब लोग सुनते ही रह गये कि हम क्या सुन रहे हैं? मैने कहा, देखो जो योग भगवद्गीता में कहा है, वो अन्य कहीं नहीं है। संपूर्ण योग केवल भगवद्गीता में है।

गीता में पूर्ण योग है। –

आज प्रातःकाल हम लोगों ने योग के कुछ अंगों, कुछ विशिष्ट विभागों को देखा था। कर्मयोग है, ज्ञानयोग है, भक्तियोग है, ध्यानयोग है, राजयोग है, हठयोग है, लययोग

शेष अगले पृष्ठ पर.....

तीव्र वैराग्य और मुक्ति

रामकृष्ण परमहंस अक्सर कहा करते थे- भगवान् को पाना हो; तो संसार से तीव्र वैराग्य होना चाहिए। जो कुछ ईश्वर के मार्ग के विरोधी मालूम हो, उसे तत्क्षण त्याग देना चाहिए। पीछे होगा – यह सोचकर छोड़ रखना ठीक नहीं है। काम और कांचन ईश्वर-मार्ग के विरोधी हैं। उनसे मन हटा लेना चाहिए। दीर्घसूत्री होने से परमार्थ का लाभ नहीं होगा।

एक व्यक्ति अँगोछा लेकर स्नान करने जा रहा था। उसकी औरत ने उससे कहा, ''तुम किसी भी काम के नहीं हो, उम्र बढ़ रही है, अब भी यह सब (व्यवहार) छोड़ नहीं सके। मुझको छोड़कर तुम एक दिन भी नहीं रह सकते; किंतु देखो, वह रामदेव कैसा त्यागी है।'' पति ने कहा, ''क्यों उसने क्या किया?''औरत ने कहा, ''उसकी सोलह औरतें हैं। वह एक-एक करके उनको त्याग रहा है। तुम कभी त्याग कर ही नहीं सकोगे!'' पति ने कहा,''क्या वह एक-एक करके त्याग रहा है! अरे पगली! वह कभी त्याग कर ही नहीं कर सकेगा। जो त्याग करता है, वह क्या थोड़ा-थोड़ा करके त्याग करता है?'' औरत ने मुस्कराकर कहा, ''तो भी तुमसे अच्छा है।'' पति ने कहा, ''पगली, तू नहीं समझती है, त्याग करना उसका काम नहीं है। अर्थात् उससे त्याग नहीं होगा, मैं ही त्याग कर सकूँगा। यह देख, मैं जा रहा हूँ।''

इसी का नाम तीव्र वैराग्य है। उस आदमी को ज्यों ही वैराग्य आया; त्यों ही उसने घर त्याग दिया। अँगोछा कंधे पर ही रहा और वह चल दिया। वह परिवार का कुछ ठीक-ठाक नहीं कर पाया। घर की ओर एक बार भी पीछे लौटकर नहीं देखा।

मुक्त एवं स्वतंत्र आत्माएँ :-

रामकृष्ण परमहंस अपने शिष्यों के साथ टहलते हुए नदी के तट पर पहुँचे। वहाँ मछुए जाल फेंककर मछलियाँ पकड़ रहे थे। एक मछुए के पास स्वामी जी खड़े हो गए और शिष्यों से कहा, ''तुम लोग ध्यानपूर्वक इस जाल में फँसी मछलियों की गतिविधियाँ देखो।''

शिष्यों ने देखा कि कुछ मछलियाँ तो ऐसी हैं, जो जाल में निश्चल पड़ी हैं, उन्होंने निकलने की कोई कोशिश ही नहीं की। कुछ मछलियाँ निकलने की कोशिश तो करती रहीं; पर निकल नहीं पाईं और कुछ जालमुक्त होकर पुनः जल में क्रीड़ा करने लगीं।

परमहंस ने शिष्यों से कहा, ''जिस प्रकार मछलियाँ तीन प्रकार की होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी तीन प्रकार के होते हैं। एक श्रेणी उनकी है, जिनकी आत्मा ने बंधन स्वीकार कर लिया है। वे इस भव-जाल से निकलने की बात सोचते ही नहीं। दूसरी श्रेणी ऐसे व्यक्तियों की है, जो वीरों की तरह प्रयत्न तो करते हैं, पर मुक्ति से वंचित रह जाते हैं और तीसरी श्रेणी उन मनुष्यों की है, जो चरम प्रयत्न द्वारा आखिर मुक्ति प्राप्त कर ही लेते हैं।''

परमहंस की बात समाप्त हुई। एक शिष्य बोला, ''गुरुदेव! एक चौथी श्रेणी भी है, जिनकेसंबंध में आपने कुछ बताया ही नहीं।''

परमहंस बोले, - ''हाँ, चौथी प्रकार की मछलियों की तरह ऐसी महान आत्माएँ भी होती हैं, जो जाल के निकट ही नहीं आतीं, फिर उनके फँसने का तो प्रश्न ही नहीं उठता''।

पिछले पृष्ठ का शेष.....

है, मंत्रयोग है। ये सारे योग किस ग्रंथ में मिलते हैं, बोलो? समाज को अपने साथ में लेकर निरंतर योगी बनते रहने के लिये ये सब बाते यदि कहीं मिलेंगी, तो वो केवल गीता में ही मिलेंगी।

भगवद्गीता हम लोगों को, समाज में मेरा स्थान, मेरे परिवार में मेरा स्थान बना रहे और वहाँ पर भी मैं योगाभ्यासी रहता हुआ, सीधे भगवान् की गोदी में जाकर के बैठ सकूँ, यहाँ तक संपूर्ण मार्गदर्शन करने वाला शास्त्र है। इसलिए भगवद्गीता क्या है? भगवद्गीता – "is a road map to the highest goal." मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक रोड़ मैप भगवद्गीता ने हम लोगों को दिया। लेकिन यदि हम उस ढंग से गीता को जानना चाहेंगे तो हमें गीता को क्रम बदल कर देखना पड़ेगा।इट इज कॅलिडिओस्कोपिक''। आपने कॅलिडिओस्कोप देखा है? काँच के टुकड़े होते हैं लेकिन उस नली को घुमाते ही वो अपनी रचना बदलते हैं और कुछ नया ही दिखता है। कुछ नया ही दिखता है। ये भगवद्गीता भी कॅलिडिओस्कोपिक है। एक दृष्टिकोण को लेकर के जब आप गीता की ओर देखते हैं न; तब नया ही दर्शन प्राप्त होता है। उस दिन मैं अचानक बोल गया कि भगवद्गीता में पूर्ण योग है।

बाकी सब योग, योग है लेकिन **भगवद्गीता का योग पूर्ण योग है।** भगवद्गीता को कैसे पढ़ना चाहिये? उसके लिये भगवद्गीता को समझने का क्रम कैसे बदलना चाहिए, इसका थोड़ासा विचार करने के लिए मुझे अवकाश भी चाहिए था, तो मैने सोचा कि अपने इन दिनों में ये सायंकालीन जो चिंतन है; उसमें ''पूर्ण योग बोधिनी गीता'' का हम लोग चिंतन करेंगे। (क्रमशः)

संपर्क योजना

सभी पाठकों को सस्नेह जय श्रीकृष्ण!

सविनय नम्र निवेदन है कि "धर्मश्री कार्यालय के सॉफ्टवेअर में आपकी संपूर्ण जानकारी अपडेट रहे ऐसी गुरुदेव की इच्छा है। ताकी समय-समय पर आपसे पत्राचार के साथ-साथ ईमेल एवं मोबाईल से भी संपर्क किया जा सके। एवं प.पू. स्वामीजी के आगामी कार्यक्रम एवं महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, गीता परिवार तथा संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल आदि के विशेष कार्य की जानकारी इस संपर्क योजनासे आपको प्राप्त हो सकेगी।

अत: सभी से विनम्र प्रार्थना है कि निम्न जानकारी फॉर्म में भरकर, **धर्मश्री के पते पर, निम्न ईमेल आयडी अथवा व्हॉटस्ऑप** पर शीघ्र प्रेषित करें।

धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट, सूर्यमुखी दत्त मंदिर के समीप, पुणे-विद्यापीठ मार्ग
पुणे - 411016 दूरभाष नं. : 020-25652589
Whats up No. : 7709103293 (Datta Khamkar) **Email :** dharmashree123@gmail.com

नाम :- श्री./श्रीमती --

पिता/पति का नाम :- --

पत्राचार का संपूर्ण पता :- --

-- **पिन कोड** ....

दूरभाष

निवास (एस.टी.डी. कोड के साथ) :- ....

कार्यालय (एस.टी.डी. कोड के साथ):- ....

मोबाईल नं. :- ....

ईमेल आयडी:- ....

मैं शब्द हूँ

मैं शब्द हूँ भावनाओं की अभिव्यक्ति से जन्म लेता हूँ,
संतों के श्रीमुख से ज्ञान रूप में निर्मित होता हूँ।
सज्जनों के अंत:करण से प्रेम बनकर उमड़ता हूँ,
गुरुजनों के जिह्वाग्र से विद्या बनकर बरसता हूँ।।

किन्नरों ने संगीत बनाकर मेरा वरण किया,
गंधर्वों ने सुंदर ध्वनि रच कर मेरा आलिंगन किया।
मैं सदाबहार हूँ मैं सर्व गुण संपन्न हूँ,
मैं सत्य हूँ, मैं चित् हूँ, मैं आनंद हूँ क्योंकि मैं शब्द हूँ।।

सतयुग में मेरा वास्तविक उपयोग हुआ था,
त्रेता में भी कुछ वैसा हीं सम्मान हुआ था।
द्वापर में मुझ द्रौपदी पर बड़ा अत्याचार हुआ था,
तब मेरे सखा कृष्ण का मुझपर बड़ा उपकार हुआ था।।

कलियुग में मुझे भीषण त्रासदी झेलनी पड़ती है,
हर वाक्य में मुझे अपमानित किया जाता है।
मैं सहमत हूँ, ठिठूरता हूँ, कभी–कभी अंत:करण में रोता हूँ,
युवाओं ने मेरे अंग–अंग को तोड़ा है, मरोड़ा है।
इनके संगीत में मुझ अबल को घृणित करके छोड़ा है।।

मैं शब्द हूँ मैं आपके सपनों को सर्वोत्कृष्ट बनाता हूँ,
मत करो मेरा अपमान, मैं आपके सुंदर मुखड़े को सजाता हूँ।
आप मेरे जरिया है, आप नहीं होते तो मैं नहीं होता।
यदि आप है तो मुझे बचाइये उन दरिंदों से जो मेरा दामन लूट रहे हैं।।

- पण्डित अभिजित पाण्डेय

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – दानदाता सूची

(दिनांक ०१/०२/२०१६ से दिनांक ३१/०३/२०१६ तक)

१ लाख एवं उससे अधिक :- हरिद्वार: पतंजली आयुर्वेद लि., **मुंबई:** रत्नीदेवी काबरा चॅरि. ट्रस्ट,
रु. ५० हजार से १ लाख :- मुंबई: मे. श्री. काबरा फाउंडेशन
रु. २५ हजार से ५० हजार :- मुंबई: मे. सरस्वतीदेवी लोया चॅरि. ट्रस्ट

रु. १० हजार से २५ हजार

मुंबई: श्री. हर्षजी शांडिल्य, **नोखा:** श्री. कन्हैय्यालालजी मल, श्री. अर्जुनलालजी गट्टाणी, श्री. शंकरलालजी गट्टाणी, श्री. हरिकिसनजी गट्टाणी, श्री. बृजमोहनजी गट्टाणी, श्री. सावतारामजी राठी, श्री. मेघराज लाहोटी, **बीकानेर:** श्री. रामगोपालजी गांधी, **नापासर:** श्री. शंकरलालजी मुंदडा, **काकडा:** श्री. रामनारायणजी लाहोटी, श्री. छगनलालजी लाहोटी, **जोरहाट:** श्री. भालचंद्रजी गट्टाणी, श्री. रमेशजी गट्टाणी, श्री. ओमप्रकाशजी गट्टाणी, श्री. अरविंदजी गट्टाणी, श्री. मुरलीधरजी गट्टाणी, श्री. माखनलालजी गट्टाणी, श्री. लीलाधरजी गट्टाणी, **सूरत:** श्रीमती विमलादेवी चांडक, श्री. पूनमचंदजी चांडक, **डुगरगढ:** श्री. नंदकिशोरजी मेहता, श्रीमती पुष्पादेवी मोहता, **नॉयडा:** श्रीमती शिल्पी मुद्गल, **हैदराबाद:** श्री. अरुण कुमारजी भांगडिया, **कोची:** श्रीमती के. श्रीमथीबाई, **सोलापुर:** श्री. जयनारायण भुतडा, श्री. विनोदजी भुतडा, श्री. प्रवीणजी भुतडा,

रु. ५ हजार से १० हजार

लखनौ: श्री. बृजेंद्रजी स्वरुपजी गुप्ता, **दिल्ली:** श्री. रोहितजी खन्ना, **नोखा:** श्री. बालचंद्रजी बाहेती, श्रीमती श्यामादेवी श्रीवास्तव, श्री. गजानंदजी गट्टाणी, **हिम्मतसर:** श्री. जगदीशजी गट्टाणी, **चंद्रपुर:** श्री. लीलारामजी उपाध्याय, श्रीमती शोभा जानवे, **आमगाव:** श्री. नरेशजी माहेश्वरी, **सेलु:** सौ. किरण बिहाणी, सौ. वंदना मंत्री, **मुंबई:** श्री. रमेशजी काबरा, **अहमदाबाद:** श्रीमती रमा दुबे, **पुणे:** श्री. सुशीलजी बहिरट, सौ. सुनीता वाघ, **हैदराबाद:** श्री. हनुमंतराव कुलकर्णी

।। श्रीहरिः ।।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज के

❊ आगामी कार्यक्रम ई. स. २०१६ ❊

दिनांक	स्थान	कथा
२७-०५ से ०५-०६-१६	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	भागवत कथा
०७-०६ से १३-०६-१६	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	श्रीकृष्ण भक्तिविलास कथा
१७-०६-२०१६	अयोध्या (उत्तरप्रदेश)	संत समागम
१८-०६ से २३-०६-१६	पुष्करराज (राजस्थान)	वेदाध्यापक शिविर
२५-०६ से २६-०६-१६	मुंबई (महाराष्ट्र)	गीता परिवार, सी.डी.प्रकाशन
०६-०७-२०१६	गोठमांगलोद	विद्यालय भूमिपूजन
११-०७ से १८-०७-१६	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	गीता साधना शिविर
१९-०७-२०१६	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	गुरु पौर्णिमा उत्सव
२०-०७ से ०९-०८-१६	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	हरिहर भक्ति महोत्सव
११ अगस्त २०१६	जांब (महाराष्ट्र)	चैतन्य ज्ञानपीठ
१३-०८ से १९-०८-१६	बेंगलोर	महाभारत कथा
२३-०८ से २४-०८-१६	सेलू (महाराष्ट्र)	ज्ञानेश्वरी प्रवचन
२५-०८ से ३१-०८-१६	ढालेगांव (महाराष्ट्र)	भागवत कथा
०३-०९ से ०४-०९-१६	शुकताल (उत्तरप्रदेश)	भारतीय संत सभा
०५-०९ से ०९-०९-१६	समालखा (हरियाणा)	हनुमानकथा
१०-०९ से १६-०९-१६	शुकताल (उत्तरप्रदेश)	भागवत कथा
२१-०९ से २९-०९-१६	मुंबई (प्रेमपुरी आश्रम)	देवि भागवत कथा

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।